لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰہِ

साप्ताहिक हिन्दी बदर मसीह मौऊद[अ.] नम्बर

धूप में जलने वाले लोग !

अगर ख़ुदा का यह वादा सच्चा है कि उसकी ओर से जो भी अवतार आया उसका मज़ाक उड़ाया गया तो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से भी हंसी ठट्ठा और मज़ाक किया जाना आवश्यक था। अत: मसीह मौऊद का विरोध उसकी सच्चाई की दलील है न कि झूठा होने की। उलमा कहलाने वाले और मौलवी लोग जिन्होंने विशेष रूप से मसीह मौऊद अलिहिस्सलाम का विरोध किया वे अत्यंत दुर्भाग्यशाली हैं कि स्वयं भी गुमराह हुए और क़ौम को भी गुमराह किया। क़ुरआन व हदीस के दृष्टिकोण से मसीह इब्न मरियम मर चुके हैं और क़ुरआन मजीद के ही दृष्टिकोण से मरा हुआ व्यक्ति संसार में दोबारा नहीं आता। आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जिस मसीह के आने की भविष्यवाणी की थी उसके बारे में फरमाया कि वह तुम में से ही होगा, अर्थात उम्मते मुहम्मदिया में से ही अवतरित होगा। मुसलमान उलमा क़ुरआन और हदीस के विरुद्ध अत्यंत गुमराह करने वाली आस्था लिए बैठे हैं कि वह मसीह इब्ने मरियम जो 2000 वर्ष पूर्व बनी इस्राईल के नबी के तौर पर आए थे वह अभी तक आसमान पर जीवित बैठे हैं और वही आसमान से अवतरित होंगे। अंतत: वह कब आएंगे? वह तो आने से रहे क्योंकि वह तो मृत्यु को प्राप्त हो चुके हैं लेकिन अल्लाह ने जिस मसीह को उम्मत-ए-मुहम्मदिया पर दया और रहम करते हुए भेजा अर्थात सय्यदना हज़रत मिर्ज़ा गुलाम अहमद क़ादियानी, उसका यह विरोध करते हैं। अल्लाह के नबी का विरोध क्यों होता है इस बारे में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं:-

इलाही सिलसिला के विरोध का वास्तविक कारण

"जब एक नबी या रसूल ख़ुदा की ओर से आता है और उसका फिर्क़ा (संप्रदाय) लोगों को एक होनहार फिर्क़ा और सच्चा और हिम्मत वाला और तरक्की करने वाला दिखाई देता है तो उसके बारे में वर्तमान क़ौमों और समुदायों के दिलों में अवश्य एक प्रकार का द्वेष और ईर्ष्या पैदा हो जाया करती है, विशेष रुप से हर एक धर्म के उलमा और गद्दीनशीन तो बहुत ही द्वेष प्रकट करते हैं, क्योंकि उस मर्द-ए-ख़ुदा के प्रादुर्भाव से उनकी आमदनी और शानो-शौकत में अंतर आता है.....उलमा और पीर लोगों का फिर्क़ा हमेशा नबियों और रसूलों से द्वेष करता चला आया है, कारण यह कि ख़ुदा के नबियों और अवतारों के समय उन लोगों की सच्चाई खुल जाती है। क्योंकि वास्तव में वे अपूर्ण होते हैं और बहुत ही कम हिस्सा नूर (प्रकाश) का रखते हैं और उनकी शत्रुता ख़ुदा के नबियों और सच्चों से केवल व्यक्तिगत होती है और पूर्णत: अपनी इच्छा के अधीन होकर नुकसान पहुंचाने के मंसूबे सोचते हैं बल्कि कभी-कभी वह अपने दिलों में अनुभव भी करते हैं कि वे ख़ुदा के एक पवित्र दिल एक सच्चे बंदे को अकारण कष्ट पहुंचा कर ख़ुदा के क्रोध के नीचे आ गए हैं और उनके कर्म भी जो विरोधपूर्ण कार्यवाहियों के लिए हर समय उनसे होते रहते हैं उनके दिल की दोषीय अवस्था को उन पर प्रकट करते रहते हैं। परंतु फिर भी द्वेष की अग्नि का तेज़ इंजन दुश्मनी के गड्ढों की ओर उनको खींचकर लिए जाता है। यही कारण थे जिन्होंने आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के समय में मुश्रिकों और यहूदियों और ईसाइयों के विद्वानों को न केवल सत्य को स्वीकार करने से वंचित रखा बल्कि घोर शत्रुता पर आमादा कर दिया।

(गवर्नमेंट अंग्रेज़ी और जिहाद, रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 17 पृष्ठ 3)

क्रम	विषय सूची	पृष्ठ
1	संपादकीय एवं विषय सूची	1
2	क़ुरआन मजीद और नबी करीम स.अ.व. की हदीसों में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के आने की ख़बर	2
3	उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम	3
4	ख़ुत्बा जुम्अ: सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़	4
5	हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जीवनी, उदारता और महान साहस के आलोक में (मौलाना मुहम्मद हमीद कौसर, नाज़िर दावत-ए-इलाल्लाह मर्कज़िया)	10
6	हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सच्चाई, इंज़ारी ओर तबशीरी भविष्यवाणियों के आलोक में (मौलाना सुल्तान अहमद ज़फर, नाज़िम इरशाद वक़्फ़-ए-जदीद)	15
7	हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का दूसरा वतन सियालकोट (मुजीबुर रहमान, मुबल्लिग़ सिलसिला सियालकोट)	21

जिन लोगों ने मसीह मौऊद को स्वीकार नहीं किया उनका उदाहरण

आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का आदेश है कि जब इमाम महदी को पाओ तो उस को मेरा सलाम पहुंचाना और एक दूसरी हदीस में फरमाया कि अगर बर्फ के पहाड़ से घुटनों के बल घिसटते हुए भी उस तक पहुंचना पड़े तो पहुंचना और उसकी बैत करना। उलमा कहलाने वालों ने आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इन अत्यंत महत्वपूर्ण उपदेशों को पीछे फेंक दिया और सलाम पहुंचाने के बजाय उस का घोर विरोध किया। उनका उदाहरण हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने उनसे दिया है जो अत्यंत भूखे हों और विभिन्न प्रकार की नेमतों से मालामाल दस्तरख्वान को ठुकरा दें और भूख से मर जाएं। आप फरमाते हैं:-

"अफसोस चौदहवीं शताब्दी में से भी 22 वर्ष बीत गए और हमारे दावे का समय इतना लंबा हो गया कि जो लोग मेरे दावे के प्रारंभिक समय में अभी पेट में थे उनकी औलाद भी जवान हो गई परंतु आप लोगों को अभी समझ न आया कि मैं सच्चा हूं। बार-बार यही कहते हैं कि हम तुम को इस वजह से स्वीकार नहीं करते कि हमारी हदीसों में लिखा है 30 दज्जाल आएंगे। हे दुर्भाग्यशाली क़ौम! क्या तुम्हारे हिस्से में दज्जाल ही रह गए। तुम हर एक ओर से इस प्रकार तबाह किए गए जिस प्रकार एक खेती को रात के समय किसी अजनबी के पशु बर्बाद कर देते हैं। तुम्हारी आंतरिक हालतें भी बहुत खऱाब हो गईं और बाहरी हमले भी पराकाष्ठा को पहुंच गए। सदी के आरंभ में जो मुजद्दिद आया करते थे, वह बात संभवत: नऊज़ुबिल्लाह ख़ुदा को भूल गई कि अब की बार अगर सदी के सर पर भी आया तो तुम्हारे कथन के अनुसार दज्जाल ही आया। तुम मिट्टी में मिल गए मगर ख़ुदा ने तुम्हारी ख़बर न ली, तुम बिदअतों में डूब गए और ख़ुदा ने तुम्हारा मार्गदर्शन न किया। तुम में से रूहानियत (अध्यात्मिकता) जाती रही, सच्चाई की गंध न रही। सच कहो अब तुम मैं रूहानियत कहां है? ख़ुदा के संबंधों के निशान कहां, धर्म तुम्हारे निकट क्या है, केवल ज़बान की चालाकी और मतभेदयुक्त झगड़े और द्वेष के जोश और अंधों की भांति हमले। ख़ुदा की ओर से एक सितारा निकला मगर तुम ने उस को नहीं पहचाना और तुमने अंधकार को अपना लिया। इसलिए ख़ुदा ने

शेष पृष्ठ 24 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

क़ुरआन मजीद और नबी करीम[स.] की हदीसों में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के आने की ख़बर

هُوَ الَّذِیۡ بَعَثَ فِی الۡاُمِّیّٖنَ رَسُوۡلًا مِّنۡهُمۡ یَتۡلُوۡا عَلَیۡهِمۡ اٰیٰتِهٖ وَیُزَکِّیۡهِمۡ وَیُعَلِّمُهُمُ الۡکِتٰبَ وَالۡحِکۡمَةَ - وَاِنۡ کَانُوۡا مِنۡ قَبۡلُ لَفِیۡ ضَلٰلٍ مُّبِیۡنٍ ۙ وَّاٰخَرِیۡنَ مِنۡهُمۡ لَمَّا یَلۡحَقُوۡا بِهِمۡ ؕ وَهُوَ الۡعَزِیۡزُ الۡحَکِیۡمُ ۝

(सूरतुल जुमा- 3)

वही है जिसने अनपढ़ लोगों में उन्हीं में से एक महान रसूल भेजा। वह उन पर उसकी आयतों की तिलावत करता है और उन्हें पवित्र करता है और उन्हें किताब की और हिकमत की शिक्षा देता है। जबकि इससे पहले वह निस्संदेह खुली खुली गुमराही में थे और (उन्हीं में से) दूसरों की ओर भी उसे भेजा जो अभी उनसे नहीं मिले। और वह पूर्ण सामर्थ्यवान और हिकमत वाला है।

सय्यदना हज़रत ख़लीफतुल मसीह राबेअ रहमहुल्लाह तआला इन आयतों की व्याख्या में फरमाते हैं:-

इस आयत में जिन आख़रीन (बाद में आने वाली क़ौम) का वर्णन किया गया है उनमें इसी रसूल के भेजे जाने का वर्णन है जिसका पिछली आयत में वर्णन हुआ है। (هُوَ الَّذِیۡ بَعَثَ فِی الۡاُمِّیّٖنَ رَسُوۡلًا) लेकिन इस आयत के आखिर पर वह चार सिफात अल्लाह तआला की बयान नहीं की गईं जो आयत नंबर 2 के अंत में वर्णन हुई हैं बल्कि केवल अज़ीज़ और हकीम की दो सिफात दोहराई गई हैं जिससे मालूम होता है कि जिस रसूल का आरंभ में वर्णन है वह दोबारा स्वयं अवतरित नहीं होगा बल्कि उसका कोई समरूप अवतरित किया जाएगा जो शरीयत वाला नबी नहीं होगा। दिलचस्प बात यह है कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के संबंध में भी यही दो सिफात अल्लाह तआला की वर्णन हुई हैं, जैसा कि फ़रमाया-

بَلۡ رَّفَعَهُ اللّٰهُ اِلَیۡهِ ؕ وَکَانَ اللّٰهُ عَزِیۡزًا حَکِیۡمًا (अन्निसा:159)

(अर्थात बल्कि अल्लाह ने उसे अपनी ओर उठा लिया और पूर्ण सामर्थ्यवान और हिकमत वाला है।)

وَاِذۡ قَالَ عِیۡسَی ابۡنُ مَرۡیَمَ یٰبَنِیۡۤ اِسۡرَآءِیۡلَ اِنِّیۡ رَسُوۡلُ اللّٰهِ اِلَیۡکُمۡ مُّصَدِّقًا لِّمَا بَیۡنَ یَدَیَّ مِنَ التَّوۡرٰىةِ وَمُبَشِّرًۢا بِرَسُوۡلٍ یَّاۡتِیۡ مِنۡۢ بَعۡدِی اسۡمُهٗۤ اَحۡمَدُ ؕ فَلَمَّا جَآءَهُمۡ بِالۡبَیِّنٰتِ قَالُوۡا هٰذَا سِحۡرٌ مُّبِیۡنٌ ۝ وَمَنۡ اَظۡلَمُ مِمَّنِ افۡتَرٰی عَلَی اللّٰهِ الۡکَذِبَ وَهُوَ یُدۡعٰۤی اِلَی الۡاِسۡلَامِ ؕ وَاللّٰهُ لَا یَهۡدِی الۡقَوۡمَ الظّٰلِمِیۡنَ ۝

(सूर: सफ आयत 7-8)

अनुवाद:- और याद करो जब ईसा इब्ने मरियम ने अपनी क़ौम से कहा कि हे बनी इस्राईल! मैं अल्लाह की ओर से तुम्हारी तरफ रसूल होकर आया हूं। जो कलाम मेरे आने से पहले उतर चुका है अर्थात तौरात, उसकी भविष्यवाणियों को भी पूरा करता हूं और एक ऐसे रसूल की भी सूचना देता हूं जो मेरे बाद आएगा, जिसका नाम अहमद होगा फिर जब वह रसूल दलीलों के साथ आ गया तो उन्होंने कहा यह तो खुला-खुला धोखा है। और उससे अधिक अत्याचारी कौन हो सकता है जो अल्लाह पर झूठ बांधे हालांकि वह इस्लाम की ओर बुलाया जाता है और अल्लाह अत्याचारियों को कभी हिदायत नहीं देता।

आयत नंबर 7 की व्याख्या में हज़रत ख़लीफतुल सानी[रज़ि] अल्लाहु अन्हु फरमाते हैं

इस आयत में रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणी है जो इंजील बरनबास में लिखी हुई है, ईसाई इसको झूठी इंजील करार देते हैं मगर यह पोप की लाइब्रेरी में पाई जाती है। इसके अतिरिक्त यह भी दलील है कि प्रसिद्ध इंजीलों में फारकीत की ख़बर दी गई है जिसके अर्थ अहमद ही के बनते हैं। अत: इस आयत में रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बिलावास्ता और आपके एक समरूप की जिसका वर्णन अगली सूरत में है, बिलवास्ता सूचना दी गई है।

आयत नंबर 8 की व्याख्या में हुज़ूर[रज़ि] फरमाते हैं

इस आयत में इस बात को प्रकट किया गया है कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के समरूप के बारे में विशेष तवज्जो चाहिए, जो है तो भविष्यवाणी का बिलवास्ता पूरा होना, परंतु इस्लाम की तरफ उसको बुलाया जाएगा। मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तो स्वयं दुनिया को इस्लाम की ओर बुलाते थे।

तुम्हारा इमाम तुम्हीं में से होगा

عَنۡ اَبِیۡ هُرَیۡرَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنۡهُ قَالَ : قَالَ رَسُوۡلُ اللّٰهِ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیۡهِ وَسَلَّمَ: کَیۡفَ اَنۡتُمۡ اِذَا نَزَلَ ابۡنُ مَرۡیَمَ فِیۡکُمۡ وَاِمَامُکُمۡ مِنۡکُمۡ وَفِیۡ رِوَایَةٍ فَاَمَّکُمۡ مِنۡکُمۡ (بخاری کتاب الانبیاء)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि अल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया तुम्हारी हालत कैसी नाज़ुक होगी जब इब्ने मरियम अर्थात मसीह का समरूप तुम में अवतरित होगा जो तुम्हारा इमाम होगा और तुम में से होगा। एक और एक रिवायत में है कि तुम में से होने के कारण वह तुम्हारी इमामत के कर्तव्य पूर्ण करेगा।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के काम

عَنۡ اَبِیۡ هُرَیۡرَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنۡهُ عَنِ النَّبِیِّ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیۡهِ وَسَلَّمَ قَالَ : لَا تَقُوۡمُ السَّاعَةُ حَتّٰی یَنۡزِلَ عِیۡسَی بۡنُ مَرۡیَمَ حَکَمًا مُقۡسِطًا وَاِمَامًا عَدۡلًا فَیَکۡسِرُ الصَّلِیۡبَ وَیَقۡتُلُ الۡخِنۡزِیۡرَ وَیَضَعُ الۡجِزۡیَةَ وَیَفِیۡضُ الۡمَالَ حَتّٰی لَا یَقۡبَلَهٗ اَحَدٌ۔

(سنن ابن ماجه کتاب الفتن باب فتنة الدجال وخروج عیسی بن مریم وخروج یاجوج وماجوج)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि अल्लाहु अन्हु बयान करते हैं- कि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया जब तक ईसा इब्ने मरियम जो इंसाफ करने वाले हाकिम और समानता का व्यवहार करने वाले इमाम होंगे, अवतरित होकर नहीं आते क़यामत नहीं आएगी। (जब वह अवतरित होंगे तो) वह सलीब को तोड़ेंगे और सूअर को कत्ल करेंगे जिज़िया के दस्तूर को समाप्त करेंगे और ऐसा माल विभाजित करेंगे जिसे लोग स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं होंगे।

इमाम महदी व मसीह मौऊद का युग

عَنۡ حُذَیۡفَةَ بۡنِ یَمَانٍ قَالَ : قَالَ رَسُوۡلُ اللّٰهِ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیۡهِ وَسَلَّمَ : اِذَا مَضَتۡ اَلۡفٌ وَمِائَتَانِ وَاَرۡبَعُوۡنَ سَنَةً یَبۡعَثُ اللّٰهُ الۡمَهۡدِیَّ (النجم الثاقب، جلد2، صفحه209)

शेष पृष्ठ 25 पर

मैं ख़ुदा तआला की ओर से इसलिए भेजा गया हूं कि ताकि मेरे हाथ से ख़ुदा तआला इस्लाम को समस्त धर्मों पर विजयी करे (उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम)

मुझे ख़ुदा तआला ने इस चौदहवीं सदी के आरंभ में भेजा है ताकि मैं क़ुरआन करीम की विशेषताओं और हजरत रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की महानता प्रकट करूँ

हे इस्लाम के बुजुर्गो! ख़ुदा तआला आप लोगों के दिलों में समस्त फ़िर्क़ों से बढ़कर नेक इरादे पैदा करे और इस नाज़ुक समय में आप लोगों को अपने प्यारे धर्म (इस्लाम) का सच्चा सेवक बना दे। मैं इस समय केवल अल्लाह तआला के लिए इस ज़रूरी मामले की सूचना देता हूं कि मुझे ख़ुदा तआला ने इस चौदहवीं सदी के आरंभ में अपनी तरफ से अवतार बना कर इस्लाम धर्म के नवीनीकरण और सहायता के लिए भेजा है ताकि मैं इस घोर अंधकार के युग में क़ुरआन की विशेषताएं और हज़रत रसूले अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की महानता प्रकट करूं और उन समस्त शत्रुओं को जो इस्लाम पर हमला कर रहे हैं उन प्रकाशों और बरकतों और विलक्षण निशानों और ईश्वरीय ज्ञान की सहायता से उत्तर दूँ जो मुझको प्रदान किए गए हैं। (बरकातुद्दुआ, रूहानी खज़ायन जिल्द 6-पृष्ठ 34)

ख़ुदा तआला ने मेरी तहरीरों (पुस्तकों) द्वारा हर एक संप्रदाय पर हुज्जत पूरी की है

लगभग 20 वर्ष गुज़रे हैं कि मुझको इस क़ुरआनी आयत का इल्हाम हुआ था और वह यह है कि-

هُوَ الَّذِیْٓ اَرْسَلَ رَسُوْلَهٗ بِالْهُدٰى وَدِیْنِ الْحَقِّ لِیُظْهِرَهٗ عَلَى الدِّیْنِ كُلِّهٖ

और मुझको इस इल्हाम के यह अर्थ समझाए गए थे कि मैं ख़ुदा तआला की ओर से इसलिए भेजा गया हूं कि ताकि मेरे हाथ से ख़ुदा तआला इस्लाम को तमाम धर्मों पर ग़ालिब करे। और इस जगह याद रहे कि यह क़ुरआन शरीफ में एक महान भविष्यवाणी है जिसके बारे में अनुसंधान करने वाले उलेमा (धार्मिक विद्वान)सहमत हैं कि यह मसीह मौऊद के हाथ पर पूरी होगी। अत: जितने भी औलिया और अनेक लोग मुझसे पहले गुजरे हैं किसी ने उनमें से अपने आप को इस भविष्यवाणी का पात्र नहीं ठहराया और न यह दावा किया कि इस उपरोक्त आयत का मुझको अपने बारे में इल्हाम हुआ है। लेकिन जब मेरा समय आया तो मुझको यह इल्हाम हुआ और मुझको बताया गया कि इस आयत का पात्र तू है और तेरे ही हाथ से और तेरे ही ज़माने में इस्लाम धर्म की विजय दूसरे धर्मों पर सिद्ध होगी। अत: यह कुदरत का करिश्मा "सर्वधर्म महोत्सव" के जलसा में प्रकट हो चुका है। और इस जलसा में मेरे भाषण के समय समस्त भाषणों के मुकाबले में प्रत्येक संप्रदाय के वकील को प्रसन्नतापूर्वक या अप्रसन्न रूप से यह इक़रार करना पड़ा कि निसंदेह इस्लाम धर्म अपनी विशेषताओं के साथ हर एक धर्म से बढ़ा हुआ है। और फिर इसी पर संतोष नहीं हुआ बल्कि ख़ुदा तआला ने मेरी पुस्तकों के साथ हर एक संप्रदाय पर हुज्जत पूरी की।

(तिर्याकुल क़ुलूब, रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 15-पृष्ठ 232)

मैं जानता हूं कि अवश्य ख़ुदा मेरी सहायता करेगा जैसा कि वह हमेशा अपने अवतारों की सहायता करता रहा है कोई नहीं जो मेरे मुकाबले पर ठहर सके

"मैं जबकि इस समय तक डेढ़ सौ भविष्यवाणियों के लगभग ख़ुदा की ओर से पाकर, अपनी आंख से देख चुका हूं कि वे स्पष्ट तौर पर पूरी हो गईं, तो मैं अपने बारे में नबी या रसूल के नाम से कैसे इंकार कर सकता हूं और जबकि स्वयं अल्लाह तआला ने यह नाम मेरे रखे हैं तो मैं कैसे रद्द करूं या उसके सिवा किसी दूसरे से डरूं। मुझे उस ख़ुदा की कसम है जिसने मुझे भेजा है और जिस पर झूठ गढ़ना लानतियों का काम है कि उसने मुझे मसीह मौऊद बनाकर मुझे भेजा है। और मैं जैसा कि क़ुरआन करीम की आयतों पर ईमान रखता हूं ऐसा ही बिना किसी मतभेद के ख़ुदा की इस खुली खुली वह्यी पर ईमान लाता हूं जो मुझे हुई, जिस की सच्चाई उसके निरंतर निशानों से मुझ पर स्पष्ट हो गई है। और मैं बैतुल्ला (खाना का'बा) में खड़े होकर यह क़सम खा सकता हूं कि वह पवित्र वह्यी जो मेरे ऊपर नाज़िल होती है वह उसी ख़ुदा का कलाम है जिसने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम और हज़रत मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर अपना कलाम उतारा था। मेरे लिए ज़मीन ने भी गवाही दी और आसमान ने भी। इस प्रकार मेरे लिए आसमान भी बोला और ज़मीन भी कि मैं अल्लाह का ख़लीफ़ा हूं मगर भविष्यवाणियों के अनुसार आवश्यक था कि इनकार भी किया जाता। इसलिए जिनके दिलों पर पर्दे हैं वे स्वीकार नहीं करते। मैं जानता हूं अवश्य ख़ुदा मेरी सहायता करेगा जैसा कि वह हमेशा अपने अवतारों की सहायता करता रहा है कोई नहीं जो मेरे मुकाबले पर ठहर सके।

(रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 18, एक गलती का इज़ाला पृष्ठ 210)

ख़ुदा तआला ने मुझको इस ज़माने के सुधार के लिए भेजा है

यह विचार कदापि ठीक नहीं कि नबी अलैहिस्सलाम दुनिया से बे वारिस ही गुज़र गए और अब उनके बारे में कुछ राय व्यक्त करना सिवाए किस्सा के और कोई हैसियत नहीं रखता। बल्कि हर एक शताब्दी में अवश्य उसके वारिस पैदा होते रहे हैं और इस शताब्दी में यह विनीत है। ख़ुदा तआला ने मुझको इस ज़माने के सुधार के लिए भेजा है ताकि वे ग़लतियां जो सिवाए ख़ुदा तआला की विशेष सहायता के निकल नहीं सकती थीं, वे मुसलमानों के विचारों से निकाली जाएं और इंकार करने वालों को सच्चे और जीवित ख़ुदा का सबूत दिया जाए और इस्लाम की महानता और वास्तविकता ताज़ा निशानों से सिद्ध की जाए, तो यही हो रहा है। क़ुरआन करीम के मआरिफ (अध्यात्म ज्ञान) प्रकट हो रहे हैं, अल्लाह के कलाम के सूक्ष्म और बारीक (भेद) खुल रहे हैं। आसमान के निशान और विलक्षण निशान प्रकट हो रहे हैं और इस्लाम की

शेष पृष्ठ 25 पर

ख़ुत्बा जुम्अः

23 मार्च जमाअत अहमदिया के इतिहास में बड़ा महत्वपूर्ण दिन है

क्योंकि इस दिन हज़रत मिर्ज़ा गुलाम अहमद क़ादियानी अलैहिस्सलाम ने जमाअत अहमदिया की स्थापन की

आप ने फरमाया कि आने वाला मसीह मौऊद और महदी माहूद जिसके आने की आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सूचन दी थी वह मैं हूं

आप ने फरमाया कि मैं इसलिए भेजा गया हूं ताकि तौहीद (एकेश्वरवाद) की स्थापन करके अल्लाह की मुहब्बत दिलों में पैदा करूं

फिर आप ने फरमाया कि यह मुक़ाम व मर्तबा मुझे आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अनुकरण और आपसे वास्तविक इश्क के कारण मिला है

अत्याचारी हैं वे लोग जो कहते हैं कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मानने वाले नऊज़ुबिल्लाह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मुक़ाम से आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मुक़ाम को कम करते हैं।

काश इन लोगों को समझ आ जाए। इस ज़माने के हकम और अदल (निर्णायक और इंसाफ करने वाले) और मसीह और महदी, हज़रत मिर्ज़ा गुलाम अहमद साहिब अलैहिस्सलाम ही हैं और इस्लाम के प्रचार और तौहीद की स्थापना और आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वास्तविक हुकूमत जो दिलों पर स्थापित होनी है, ज़मीनों पर नहीं दिलों पर क़ायम होनी है वह मसीह मौऊद के द्वारा ही होनी है और आप की जमाअत के द्वारा ही स्थापित होनी है न की किसी तलवार या बंदूक या शक्ति से या आतंकवाद फैलाने से और इस्लाम के नाम पर पीड़ितों को कत्ल करने से।

---

23 मार्च मसीह मौऊद दिवस के उपलक्ष में सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ का ख़ुत्बः जुमअः दिनांक 24 मार्च 2017 ई. पाठकों की सेवा में प्रस्तुत है

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَ رَسُوْلُهُ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

कल 23 मार्च थी और 23 मार्च जमाअत अहमदिया के इतिहास में बड़ा महत्वपूर्ण दिन है क्योंकि इस दिन हज़रत मिर्ज़ा गुलाम अहमद क़ादियानी अलैहिस्सलाम ने जमाअत अहमदिया की स्थापन की। आप ने फरमाया कि आने वाला मसीह मौऊद और महदी माहूद जिसके आने की आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सूचन दी थी वह मैं हूं। आप ने फरमाया कि मैं इसलिए भेजा गया हूं ताकि तौहीद (एकेश्वरवाद) की स्थापन करके अल्लाह की मुहब्बत दिलों में पैदा करूं। आप ने फरमाया कि ख़ुदा तआला चाहता है कि उन समस्त लोगों को जो ज़मीन के विभिन्न क्षेत्रों में आबाद हैं क्या यूरोप और क्या एशिया उन सबको जो नेक फितरत रखते हैं तौहीद की तरफ खींचे और अपने बंदों को एक धर्म पर एकत्र करे, यही ख़ुदा तआला का मकसद है जिसके लिए मैं दुनिया में भेजा गया। अतः तुम इस मकसद का अनुकरण करो, परंतु नरमी और सद्व्यवहार और दुआओं पर ज़ोर देने से।

(अल-वसीयत रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 20 पृष्ठ 306-307)

फिर आप ने फरमाया कि यह मुक़ाम व मर्तबा मुझे आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अनुकरण और आपसे वास्तविक इश्क के कारण मिला है इसलिए समस्त दुनिया के लिए यह पैगाम है कि उस रसूल से मुहब्बत करो और उस की पैरवी करो। उससे ख़ुदा तआला से भी संबंध स्थापित होगा और वास्तविक एकेश्वरवादी भी बन सकोगे।

आप फरमाते हैं कि समस्त मानवजाति के लिए अब कोई रसूल और सिफारिश करनो वाला नहीं सिवाय मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इसलिए कोशिश करो कि सच्ची मुहब्बत उस तेजस्वी नबी के साथ रखो और उसके अतिरिक्त अन्य को उस पर किसी प्रकार की प्राथमिकता मत दो, ताकि आसमान पर तुम मुक्ति प्राप्त लिखे जाओ। और याद रखो मुक्ति वह चीज़ नहीं जो मरने के बाद प्रकट होगी बल्कि वास्तविक मुक्ति वह है कि इसी

दुनिया में अपन प्रकाश दिखलाती है। मुक्तिप्राप्त कौन है? वह जो विश्वास रखता है कि ख़ुदा सच्चा है और मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उसमें और तमाम मानवजाति में मध्यस्थ सिफारिश करनो वाले हैं और आसमान के नीचे न उसके हम मर्तबा, न उसके समान कोई और रसूल है और न क़ुरआन के समान कोई और किताब है और किसी के लिए ख़ुदा ने यह न चाहा कि वह हमेशा जीवित रहे परंतु यह सम्माननीय नबी हमेशा के लिए जीवित है।

(किश्ती नूह, रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 19 पृष्ठ 13-14)

यह है वह मुक़ाम और हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से मुहब्बत जिसका आपने हमेशा भरपूर इज़हार किया और अपने मानने वालों को भी इस बात का उपदेश किया कि वह उस मुहब्बत और मुक़ाम को अपने सामने रखें।

अत्याचारी हैं वे लोग जो कहते हैं कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और आपके मानने वाले नऊज़ुबिल्ला हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मुक़ाम से आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मुक़ाम को कम करते हैं। और आजकल अल्जीरिया में भी अहमदियों पर यह आरोप लगाया जा रहा है और आरोप लगाकर उन्हें जेल में डाला जा रहा है, यहां तक कि अब औरतों पर भी उन्होंने हाथ डालने शुरु कर दिए हैं, उन पर मुक़द्दमा दायर करनो आरंभ कर दिए हैं। कई कई घंटे सफर करवाकर दूध पीते कुछ महीने के बच्चों के साथ औरतों को दूसरे शहरों में ले जाया जाता है और मुक़द्दमा दायर किया जाता है और जेल भेज दिया जाता है लेकिन औरतें भी यही पैगाम मुझे भिजवा रही हैं कि हमने मसीह मौऊद को माना है और इस मानने के बाद ही हमें वास्तविक तौहीद और आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मुक़ाम मर्तबा और आपसे सच्ची मुहब्बत की वास्तविकता पता चली है, हम किस तरह अपने ईमान से पीछे हट सकती हैं।

जहां हम यह दुआ करते हैं कि अल्लाह तआला इन अहमदियों के लिए सरलता पैदा करे, वहां हमारी यह दुआ भी है कि अल्लाह तआला मुसलमानों को आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आशिक के साथ एक सच्चे प्रेमी को मानने का सामर्थ्य प्रदान करे। वह जो अल्लाह के वादे के मुताबिक तौहीद की स्थापन और इस्लाम के नवीनीकरण के लिए आया था। अल्लाह तआला से मुहब्बत और तौहीद की स्थापन के लिए आप की तड़प की एक झलक आपके इन शब्दों से मिलती है।

आप अल्लाह तआला को संबोधित करके फरमाते हैं- "देख! मेरी रूह अत्यंत भरोसे के साथ तेरी ओर ऐसे उड़ रही है जैसे कि पक्षी अपने घोंसले की ओर आता है। अत: मैं तेरी कुदरत के निशान का इच्छुक हूं। लेकिन न अपने लिए और न अपने सम्मान के लिए बल्कि इसलिए कि लोग तुझे पहचानें और तेरे पवित्र मार्ग को अपनाएं और जिसको तूने भेजा है उसको झुठला कर हिदायत से दूर न जा पड़ें। फरमाया कि मैं गवाही देता हूं कि तूने मुझे भेजा है और मेरी सहायता में बड़े-बड़े निशान प्रकट किए हैं यहां तक कि सूरज और चांद को आदेश दिया कि वह रमज़ान में भविष्यवाणी की तिथियों के अनुसार ग्रहण में आयें----मैं तुझे पहचानता हूं कि तू ही मेरा ख़ुदा है इसलिए मेरी रूह तेरे नाम से ऐसे उछलती है जैसा कि दूध पीता बच्चा मां के देखने से, लेकिन अधिकतर लोगों ने मुझे नहीं पहचाना और न स्वीकार किया।"

(तिर्याक़ुल क़ुलूब, रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 15 पृष्ठ 511)

इस बात से जहां आप अलैहिस्सलाम की अल्लाह तआला से मुहब्बत और उसकी महानता स्थापित करनो के लिए तड़प नज़र आती है वहां इंसानियत को बचाने के लिए बेचैनी का भी इज़हार नज़र आता है और क्यों न हो आप ही तो आखरी ज़माने में आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की गुलामी में अल्लाह तआला की मुहब्बत को दिलों में स्थापित करनो वाले और न केवल खुद स्थापित करनो वाले हैं बल्कि स्वयं भी अल्लाह तआला की मुहब्बत में डूबे हुए थे। आपको कितनी तड़प थी कि अल्लाह तआला से इश्क और मुहब्बत की यह चिंगारी दूसरों के दिलों में भी पैदा हो जाए, इस बारे में आप फरमाते हैं-

"क्या दुर्भाग्यशाली वह व्यक्ति है जिसको अब तक यह पता नहीं कि उसका एक ख़ुदा है जो हर एक चीज़ पर सामर्थ्यवान है। हमारी जन्नत हमारा ख़ुदा है, हमारे सर्वश्रेष्ठ आनंद हमारे ख़ुदा में हैं क्योंकि हमने उसको देखा और हर एक सुंदरता उसमें पाई, यह दौलत लेने के योग्य है यद्यपि जान देने से मिले और यह मोती खरीदने के योग्य है यद्यपि समस्त अस्तित्व खोने से प्राप्त हो। हे वंचितो! इस स्रोत की ओर दौड़ो कि वह तुम्हारी प्यास बुझाएगा। यह जीवन का स्रोत है जो तुम्हें बचाएगा। मैं क्या करूं और किस प्रकार इस खुशखबरी को दिलों में बिठा दूं। किस दफ़ से मैं बाज़ारों में मुनादी करूं कि तुम्हारा यह ख़ुदा है ताकि लोग सुन लें और किस दवा से इलाज करूं ताकि सुनने के लिए लोगों के कान खुलें।

(किश्ती नूह, रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 19 पृष्ठ 21)

इन शब्दों की गहराई में कितना दर्द है बल्कि कहना चाहिए कि प्रत्येक शब्द में दर्द के कई पहलू छुपे हुए हैं। हर शब्द के कई पड़ाव हैं और हर परत में दर्द है और उनकी गहराई में हर एक अपनी समझ और पहुंच के दृष्टिकोण की अनुसार जा सकता है। परंतु जिस सीमा तक भी कोई अपने सामर्थ्य के अनुसार पहुंचेगा रूहानियत में अत्यंत बुलंदी और उन्नति हासिल करने वाला होगा। फिर ख़ुदा तआला की उपासन और ख़ुदा तआला से मुहब्बत की नसीहत करते हुए आप फरमाते हैं कि "अगर तुम ख़ुदा के हो जाओगे तो निसंदेह समझो कि ख़ुदा तुम्हारा ही है। तुम सोए हुए होगे और ख़ुदा तआला तुम्हारे लिए जागेगा तुम दुश्मन से बेपरवाह होगे और ख़ुदा उसे देखेगा और उस के मंसूबे को तोड़ेगा। तुम अभी तक नहीं जानते कि तुम्हारे ख़ुदा में क्या-क्या कुदरतें हैं और अगर तुम जानते तो तुम पर कोई ऐसा दिन न आता कि तुम दुनिया के लिए अत्यंत दुखी हो जाते। एक व्यक्ति जो एक खज़ाना अपने पास रखता है, क्या वह एक पैसा के व्यर्थ होने से रोता है और चीखें मारता है और तबाह होने लगता है? फिर अगर तुमको उस ख़ज़ाना की सूचना होती कि ख़ुदा तुम्हारी हर एक आवश्यकता के समय काम आने वाला है तो तुम दुनिया के लिए ऐसे पागल न होते। ख़ुदा एक प्यारा ख़ज़ानाा है उसकी कदर करो कि वह तुम्हारे हर एक कदम में तुम्हारा सहायक है। तुम बिना उसके कुछ भी

नहीं और न तुम्हारे सामान और उपाय कोई वस्तु हैं। फरमाते हैं- ग़ैर क़ौमों की नकल न करो कि जो पूरी तरह से सामानों पर गिर गई हैं। दुनियादारी और भौतिकता के अतिरिक्त उनमें कुछ नहीं और जैसे सांप मिट्टी खाता है उन्होंने गंदे सामानों की मिट्टी खाई और जैसे गिद्ध और कुत्ते मुर्दा खाते हैं, उन्होंने मुर्दा पर दांत मारे। वह ख़ुदा से बहुत दूर जा पड़े।

फरमाया कि मैं तुम्हें आवश्यकता के अनुसार सामानों के प्रयोग से मना नहीं करता (काम करनो से, चीज़ों का लाभ उठाने से, सांसारिक चीज़ो के प्रयोग से मना नहीं करता) बल्कि उससे मना करता हूं कि तुम ग़ैर क़ौमों की तरह पूर्णता सामानों के बंदे हो जाओ और उस ख़ुदा को भूल जाओ जो सामानों को भी उपलब्ध करता है। (यह माध्यम जो हैं अर्थात सांसारिक वस्तु हैं इनको वही पैदा करता है उन पर न गिरो बल्कि ख़ुदा की तरफ देखो जो यह चीज़ें पैदा करता है) फरमाया कि अगर तुम्हारी आंख हो तो तुम्हें नज़र आ जाए कि ख़ुदा ही ख़ुदा है और सब तुच्छ है।

(किश्ती नूह रूहानी ख़ज़ायन, जिल्द 19 पृष्ठ 21-22)

अत: यह संबंध है ख़ुदा तआला से जिसको हमने प्राप्त करना और स्थापित करना है जो आप अपने मानने वालों से चाहते हैं कि यह मियार प्राप्त हों। जैसा कि मैं अभी वर्णन कर चुका हूं कि तौहीद की स्थापना और इस्लाम के नवीनीकरण का काम आप अलैहिस्सलाम को आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पैरवी और आपसे इश्क और मुहब्बत के कारण मिला। इश्क और मुहब्बत के नज़ारे हमें आपके अस्तित्व में किस प्रकार नज़र आते हैं उसके बहुत से वाकियात हैं।

एक वाक़िया को रावी बयान करते हैं कि एक बार आप मस्जिद मुबारक में अकेले टहल रहे थे और कुछ गुनगुना रहे थे और साथ ही आपकी आंखों से आंसू बह रहे थे। जब उस व्यक्ति ने निवेदन किया कि हुज़ूर को कौन सा सदमा पहुंचा है? तो फरमाया कि मैं हज़रत हस्सान बिन साबित का यह शेर पढ़ रहा था जो उन्होंने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के देहांत पर कहा था, शेर यह है-

كُنْتَ السَّوَادَ لِنَاظِرِيْ فَعَمِيَ عَلَيْكَ النَّاظِرُ
مَنْ شَاءَ بَعْدَكَ فَلْيَمُتْ فَعَلَيْكَ كُنْتُ أُحَاذِرُ

अर्थात हे ख़ुदा के प्यारे रसूल तू मेरी आंख की पुतली था जो आज तेरी मृत्यु के कारण अंधी हो गई है। अब तेरे बाद जो चाहे मरे मुझे तो तेरी मौत का डर था जो हो चुकी है हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फरमाया मैं यह शेर जब पढ़ रहा था तो मेरे दिल में यह इच्छा पैदा हुई कि काश यह शेर मेरी ज़बान से निकलता। यह शेर पढ़ते हुए आपकी आंखों से बहुत आंसुओं का निकलना आपके दिल की अवस्था का हाल बता रहा था। अत: वे लोग इस इश्क व मुहब्बत के इज़हार के निकट भी कहां पहुंच सकते हैं जो आप पर आरोप लगाते हैं कि नऊज़ुबिल्ला आपने स्वयं को आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मुक़ाम से ऊंचा दर्जा दिया हुआ है।

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि अल्लाह तआला अन्हु ने आपकी इस भावुकता कि जो अवस्था थी उसका बड़े दर्द भरे अंदाज में इस प्रकार नक्शा खींचा है कि वह व्यक्ति जिसने हर प्रकार की सख्ती और तंगी का सामना किया, जिस पर मुखालिफत की बहुत सी आंधियां चलीं, बहुत सी तकलीफों और कष्टों से गुज़रे, कत्ल के मुकद्दमे आप पर बने, दोस्तों और निकट संबंधियों और प्यारों, यहां तक कि बच्चों की मौत के नज़ारे देखे लेकिन आपके करीब रहने वालों ने कभी आपके चेहरे और आंखों पर आप की हार्दिक भावनओं का इज़हार नहीं देखा। लेकिन इस अवसर पर जहां इश्के रसूल के इज़हार का अवसर आया तो आपकी आंखें सैलाब के समान बह रही थीं। (सीरत-ए-तय्यबा हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि. पृष्ठ 28-30)

आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से इश्क और मुहब्बत के नज़ारे आप की पुस्तकों और मलफूज़ात में भी बहुत मिलते हैं। एक स्थान पर इस्लाम के विरोधियों के आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अस्तित्व पर हंसी-ठट्ठा करने की बातें सुनकर अपनी हार्दिक भावनओं का इज़हार करते हुए आपने फरमाया- "कि मेरे दिल को किसी चीज़ ने कभी इतना दुख नहीं पहुंचाया जितना कि इन लोगों के हंसी-ठट्ठा ने पहुंचाया है जो वे हमारे पवित्र रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शान में करते रहते हैं। उनके दिल दुखाने वाले कटाक्ष जो वे हज़रत खैरुल बशर (मनुष्यों में श्रेष्ठ) सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अस्तित्व के विरुद्ध करते हैं, मेरे दिल को बहुत घायल कर रखा है। ख़ुदा की क़सम अगर मेरी सारी औलाद और औलाद की औलाद और मेरे सारे दोस्त और मेरे सारे सहायक मेरी आंखो के सामने कत्ल कर दिए जाएं और स्वयं मेरे अपने हाथ और पांव काट दिए जाएं और मेरी आंख की पुतली निकाल फेंकी जाए और मैं अपनी समस्त इच्छाओं से वंचित कर दिया जाऊं और अपनी समस्त प्रसन्नताओं और समस्त आनंदो को खो बैठूं, तो इन समस्त बातों के मुकाबले पर मेरे लिए यह सदमा अधिक भारी है कि रसूले अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर ऐसे अपवित्र हमले किए जाएं। अत: हे मेरे आसमानी आका! तू हम पर अपनी रहमत और सहायता की नज़र कर और हमें इस महान संकट से मुक्ति दे।

(आईना कमालात-ए-इस्लाम रूहानी ख़ज़ायन, जिल्द 5 पृष्ठ 15)

क्या कोई है जो इस प्रकार की भावनओं का इज़हार कर सके। इश्क और मुहब्बत का दावा करने वाले तो बहुत हैं, नामूसे रिसालत और ख़त्मे नबूवत के नम पर दंगा और फसाद और कत्ल करने वाले तो बहुत लोग हैं लेकिन क्या कोशिशें की हैं उन्होंने आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मुक़ाम को दुनिया से मनवाने के लिए और इस्लाम और क़ुरआन को दुनिया में फैलाने के लिए। आपके शब्द केवल मुंह का दावा नहीं है बल्कि आपके साथ संबंध रखने वाले भी और दूसरे अन्य भी इस बात की गवाही देते हैं कि आपका आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से इश्क और मुहब्बत का इज़हार आपके दिल की आवाज़ और आपके हर कार्य से सिद्ध होता है। अत: इस का इज़हार करते हुए अमृतसर के एक अखबार जिसका नाम 'वकील' था जो गैर अहमदियों का अखबार था, उसने आपकी मृत्यु पर लिखा कि मिर्ज़ा साहिब के देहांत ने उनकी कुछ आस्थाओं से अत्यंत विरोध के बावजूद हमेशा की जुदाई पर मुसलमानों को, हां रोशन ख्याल मुसलमानों को महसूस (अनुभूत) करा दिया है कि उनका एक बड़ा व्यक्ति उन से जुदा हो गया है और उसके साथ ही इस्लाम के विरोधियों के मुकाबले पर इस्लाम की इस

शानदार प्रतिरक्षा का भी जो उसके व्यक्तित्व के साथ संबंधित थी, समापन हो गया है। फिर कहता है- मिर्ज़ा साहिब के लिटरेचर की महानता आज, जबकि वह अपना काम पूरा कर चुका है हमें दिल से स्वीकार करनी पड़ती है। लिखता है कि भविष्य में हमारी प्रतिरक्षा का सिलसिला चाहे कितना ही फैल जाए, असंभव है कि मिर्ज़ा साहिब की पुस्तकों को छोड़ा जा सके। (सीरत ए तय्यबा हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब पृष्ठ 45-46) इन पुस्तकों के बिन इस्लाम की प्रतिरक्षा संभव ही नहीं।

अत: यह सब कुछ जो आपने किया तो इस्लाम को अल्लाह तआला का अंतिम धर्म और पूर्ण दीन सिद्ध करने के लिए किया और आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के प्यार के कारण, आपके मुक़ाम का लोहा मनवाने के लिए किया, दुनिया को बताने के लिए किया कि वास्तविक मुक़ाम आपका ही है। समस्त संसार और संसार के धर्मों पर यह स्पष्ट किया कि दीन-ए-मुहम्मद जैसा कोई दीन (धर्म) नहीं।

ऐतराज़ करने वाले, आपके आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से इश्क और मुहब्बत के इज़हार को तो पढ़ें, उस पर विचार करें अन्यथा ऐतराज़ केवल नाम के लिए करना तो मूर्खता की निशानी है। आप एक वफादार शिष्य और एक उपकार स्वीकार करने वाले सेवक के समान हमेशा फरमाते थे कि यह सब कुछ मुझे मेरे आक़ा हज़रत मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के द्वारा और आपके अनुकरण से ही मिला है। अत: इस का इज़हार करते हुए आप एक स्थान पर फरमाते हैं कि मैं उसी ख़ुदा की क़सम खाकर कहता हूं कि जैसा कि उसने इब्राहिम से वार्तालाप किया और फिर इसहाक से और इस्माइल से और याकूब से और यूसुफ से और मूसा से और मसीह इब्ने मरियम से और सब के बाद हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से ऐसा वार्तालाप हुआ कि आप पर सबसे अधिक प्रकाशमान और पवित्र वह्यी उतारी। ऐसा ही उसने मुझे भी अपने वार्तालाप का सौभाग्य प्रदान किया। मगर यह सौभाग्य मुझे केवल आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अनुकरण से प्राप्त हुआ है। अगर मैं आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्मत न होता और आपका अनुकरण न करता तो अगर दुनिया के समस्त पहाड़ों के बराबर मेरे कर्म होते तो फिर भी मैं कभी यह वार्तालाप का सौभाग्य प्राप्त न कर पाता।

(तजल्लियात-ए-इलाहिया, रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 20 पृष्ठ 411-412)

यह बातें सुनकर जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम पर ऐतराज़ करता है वह अत्याचारी, मूर्ख, फसाद फैलाने वाला है। इसके अतिरिक्त कुछ नहीं कहा जा सकता। यह जो बड़े-बड़े उलमा बने फिरते हैं उन का मामला अब ख़ुदा तआला पर है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के अवतरित होने का उद्देश्य जहां तौहीद की स्थापना और आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मुक़ाम मर्तबा को स्पष्ट करके दुनिया को आप के झंडे के नीचे लाना था वहां मानवजाति के अधिकारों की पूर्ति और अल्लाह तआला की सृष्टि पर दया भाव करवाना भी था। अत: आपने बैत की शर्तों में भी यह शर्त रखी बल्कि दो शर्तें सीधे तौर पर इससे संबंधित हैं।

शर्त नंबर 4 में आपने फरमाया सामान्य सृष्टि को सामान्य रूप से और मुसलमानों को विशेष रूप से अपने व्यक्तिगत जोशों से किसी प्रकार का अनुचित कष्ट नहीं देगा, (बैत करने वाला यह वादा करे) न ज़ुबान से न हाथ से न किसी और प्रकार से।

फिर नवमी शर्त यह है कि- सामान्य मानवजाति की सहानुभूति में केवल अल्लाह तआला की खातिर व्यस्त रहेगा और जहां तक सामर्थ्य हो अपनी ईश्वरप्रदत्त शक्तियों और नेमतों से मानव जाति को लाभ पहुंचाएगा।

(इज़ाला औहाम, रूहानी ख़ज़ायन, जिल्द 3 पृष्ठ 564)

अत: इसके अनुसार इस्लामी शिक्षा का वर्णन करते हुए फरमाते हैं कि "धर्म के दो ही पूर्ण हिस्से हैं एक ख़ुदा से मुहब्बत करना और एक मानवजाति से इतनी मुहब्बत करना कि उनकी मुसीबत को अपनी मुसीबत समझ लेना और उनके लिए दुआ करना।

(नसीम दावत रुहानी ख़ज़ायन जिल्द 19 पृष्ठ 464)

फिर आप फरमाते हैं इस्लामी शिक्षा के अनुसार इस्लाम धर्म के हिस्से केवल दो हैं या यूं कह सकते हैं कि यह शिक्षा दो बड़े उद्देश्यों पर आधारित है। आप फरमाते हैं कि प्रथम यह कि एक ख़ुदा को जानना, जैसा कि वह वास्तव में मौजूद है और उससे मुहब्बत करना और उसके वास्तविक आज्ञापालन में अपने व्यक्तित्व को लगाना जैसा कि आज्ञापालन और मुहब्बत की शर्त है। फिर फरमाया के दूसरा उद्देश्य यह है कि उसके बंदों की सेवा और सहानुभूति में अपनी समस्त शक्तियों को खर्च करे, समस्त ताकतों को, समर्थन और योग्यताओं को खर्च करे और बादशाह से लेकर मामूली इंसान तक जो उपकार करने वाला हो धन्यवाद पूर्वक और उपकार के साथ बदला देना।

(तोहफ़ा क़ैसरिया रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 12 पृष्ठ 281)

अत: यह है वह शिक्षा जो ख़ुदा तआला की मुहब्बत के बाद मानव जाति से व्यवहार करने की है या यूं कह सकते हैं कि ख़ुदा तआला की मुहब्बत की वजह से उसकी सृष्टि की सहानुभूति की ओर ध्यान दिलाती है।

इस बारे में आपकी अपनी हालत और कर्म क्या है हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की अपनी हालत इस बारे में क्या थी? आप किस प्रकार कर्म करते थे? उसकी व्याख्या करते हुए एक स्थान पर आप फरमाते हैं- मैं समस्त मुसलमानों और ईसाइयों और हिंदुओं और आर्यों पर यह बात प्रकट करता हूं कि दुनिया में कोई मेरा शत्रु नहीं है (अर्थात में किसी को भी इन विरोध करने वालों को भी शत्रु नहीं समझता) फरमाया- मैं मानवजाति से ऐसी मुहब्बत करता हूं कि जैसे एक दयावान माता अपने बच्चों से बल्कि उससे भी बढ़कर। फरमाया कि- मैं केवल उन झूठी आस्थाओं का शत्रु हूं जिनसे सच्चाई का खून होता है। इंसान की हमदर्दी मेरा कर्तव्य है और झूठ और शिर्क और अत्याचार और हर एक बुरे काम और नाइंसाफी और अव्यवहार से दूर रहना मेरा सिद्धांत।

(अरबईन रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 17 पृष्ठ 344)

फिर आप एक स्थान पर और अधिक व्याख्या करते हुए फरमाते हैं- स्पष्ट है कि हर एक वस्तु अपनी नस्ल से मुहब्बत करती है यहां

तक की चीटियाँ भी चीटियों से, अगर कोई व्यक्तिगत हित न हो तो। अत: जो व्यक्ति ख़ुदा तआला की ओर बुलाता है उसका कर्तव्य है फरमाया कि "जो शख्स के ख़ुदा तआला की ओर बुलाता है (आप ख़ुदा तआला की तरह बुला रहे हैं) उसका कर्तव्य है कि सबसे अधिक मुहब्बत करे। अत: मैं मानवजाति से सबसे अधिक मुहब्बत करता हूं। हां उनके बुरे कर्मो और हर एक प्रकार के अत्याचार और बुराई और बगावत का शत्रु हूं, किसी का व्यक्तिगत शत्रु नहीं। इसलिए वह ख़ज़ाना जो मुझे मिला है जो जन्नत के समस्त ख़ज़ानों और नेमतों की कुंजी है वह जोशे मुहब्बत से मानव जाति के सामने प्रस्तुत करता हूं और यह बात कि वह माल जो मुझे मिला है वह वास्तव में हीरा सोना और चांदी की प्रजाति में से है कोई छोटी वस्तु नहीं, बड़ी सरलता से ज्ञात हो सकता है और वह यह कि इन समस्त दिरहम और दीनार और हीरे जवाहरात पर बादशाही सिक्के का निशान है। (अर्थात बादशाह के सिक्के का निशान, कौन सा बादशाह?) अर्थात वे आसमानी गवाहियां मेरे पास हैं जो किसी दूसरे के पास नहीं हैं। अल्लाह तआला मेरी सहायता करता है मेरी गवाही देता है। फ़रमाया कि मुझे बताया गया है कि समस्त धर्मों में से इस्लाम धर्म ही सच्चा है। मुझे बताया गया है कि समस्त हिदायतों में से केवल क़ुरआन की हिदायत ही पूर्ण है और मानवीय मिलावट से पवित्र है। मुझे समझाया गया है कि समस्त रसूलों में से पूर्ण शिक्षा देने वाला और उत्तम श्रेणी की पवित्र और हिकमत वाली शिक्षा देने वाला और माननीय विशेषताओं का अपने जीवन के द्वारा उत्तम आदर्श दिखलाने वाला केवल हज़रत सय्यदना व मौलान मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं। और मुझे ख़ुदा की पवित्र वह्यी से सूचना दी गई है कि मैं उसकी ओर से मसीह मौऊद और महदी माहूद और आंतरिक एवं बाह्य मतभेदों का निर्णायक हूं। यह जो मेरा नाम मसीह और महदी रखा गया, इन दोनों नामों से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुझे नामित किया और फिर ख़ुदा ने अपने बिलावास्ता इल्हाम से यही मेरा नाम रखा और फिर संसार की वर्तमान हालत ने मांग की कि यही मेरा नाम हो।

(अरबईन नंबर 1 रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 17 पृष्ठ 345)

यह बातें केवल आपने लिखने के लिए नहीं लिख दीं, केवल दावा ही नहीं किया कि आप को मानवजाति से मुहब्बत है और सबसे अधिक मुहब्बत है इसका पालन भी आपके जीवन में हमें नज़र आता है। एक ओर आपके मसीह और महदी होने का दावा है और इस दावे के सत्यापन के लिए अल्लाह तआला जब लोगों के लिए कुछ निशान प्रकट करता है, ऐसे निशान जो आपदाओं के रूप में हैं तो आप व्याकुल हो जाते हैं। अत: मौलवी अब्दुल करीम साहिब जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मकान के एक हिस्से में रहते थे, बताते हैं कि प्लेग की आपदा फैलने के दिनों में जब एक-एक दिन में बहुत से लोग उसका शिकार हो रहे थे और मौत के मुंह में जा रहे थे। मौलवी अब्दुल करीम साहिब कहते हैं कि मैंने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को दुआ करते हुए सुना जिसे सुनकर मैं हैरान रह गया। हज़रत मौलवी साहिब कहते हैं इस दुआ में आपकी आवाज़ अर्थात हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की आवाज में इतना दर्द और तड़प थी कि सुनने वालों का पित्ता पानी होता था। (सुन कर भी अजीब भावुकता की हालत हो जाती थी) और आप इस प्रकार अल्लाह तआला के दरबार में गिड़गिड़ाकर दुआ कर रहे थे, (इस प्रकार रो रहे थे और ऐसी तकलीफ से आपकी आवाज़ निकल रही थी) जैसे कोई औरत प्रसव के दर्द से बेक़रार हो। मौलवी साहिब कहते हैं कि मैंने ध्यान लगाया और से सुना कि आप मानवजाति के लिए प्लेग से मुक्ति की दुआ करते थे कि अगर यह लोग प्लेग से तबाह हो जाएंगे तो फिर तेरी उपासन कौन करेगा।

(सीरते तय्यबा, हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब पृष्ठ 54)

अत: विचार करें एक भविष्यवाणी के अनुसार विरोधियों पर यह अज़ाब आ रहा है लेकिन आप उसको दूर होने की दुआ मांग रहे हैं और इस अज़ाब के टलने की वजह से संभव है बल्कि विरोधियों ने शोर मचान था, आपकी भविष्यवाणी संदेह युक्त हो सकती थी, लेकिन मानवजाति की सहानुभूति ने इसकी परवाह नहीं की और दुआ यह करते हैं कि उनको अज़ाब से बचा ले और ईमान की सुरक्षा के लिए कोई दूसरा मार्ग दिखा दे। आपके विरोधी भी कभी यह नहीं कह सकते कि आपने हमदर्दी के अवसर पर उन से हमदर्दी नहीं की। इसके बहुत से वृतांत आपके जीवन में मिलते हैं एक वृतांत बयान करता हूं।

जब मीनारतुल मसीह की तामीर शुरू होने लगी तो हिंदुओं ने शोर मचाया कि इस से हमारे घरों की बेपर्दगी होगी। इस पर सरकार की ओर से एक मजिस्ट्रेट छानबीन के लिए आया। उसको हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने सविस्तार पूरी घटना बताई। और बताया कि यह तो एक निशान के तौर पर है इस पर रोशनी लगाई जाएगी, इलाका प्रकाशमान होगा बेपर्दगी कदापि नहीं होगी और अगर उनकी बेपर्दगी है तो हमारे घरों की भी होगी तो यह बिल्कुल गलत विचार है कि बेपर्दगी होगी। यह सब व्यर्थ बातें हैं। मजिस्ट्रेट के साथ वहां एक हिंदू लाला बुड्ढामल भी थे। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फरमाया कि यह यहां रहते हैं क़ादियान में हमारे पड़ोसी हैं, इस शहर के रहने वाले हैं। उनको पता है कि मैंने हमेशा पड़ोसियों का और मानवजाति का ख्याल रखा है। लाला बुड्ढामल आपके साथ हैं उनसे पूछा जाए कि कभी कोई ऐसा अवसर भी आया है जब उनको मेरी सहायता की आवश्यकता थी और मैंने उसमें कोई कमी की हो या किसी भी प्रकार का लाभ उन्हें पहुंचाने में मेरी ओर से कभी कोई रोक हुई हो और फिर इनसे यह भी पूछ लें कि क्या कभी ऐसा हुआ है कि इन्हीं लाला बुड्ढामल साहिब को मुझे हानि पहुंचाने का कोई अवसर मिला हो और यह हानि पहुंचाने से रुके हों। इन्होंने हमेशा मुझे हानि पहुंचाई है और मैंने हमेशा इनको लाभ पहुंचाया। इस समय लाला साहिब वहां मजिस्ट्रेट के साथ थे, उनको हिम्मत नहीं हुई कि इस बात का इंकार करें बल्कि शर्म और लज्जा का इज़हार था।

(सीरते तय्यबा, हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब, पृष्ठ 61-63)

अत: यह थे हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के आदर्श कि हानि पहुंचाने वालों को भी मानवजाति की सहानुभूति के अंतर्गत लाभ पहुंचाया। मौलवी मुहम्मद हुसैन बटालवी साहिब जिन्होंने विरोध को पराकाष्ठ टक पहुंचा दिया। हज़रत मसीह

मौऊद अलैहिस्सलाम पर कुफ्र का फतवा लगाया और दज्जाल और गुमराह करार दिया नऊज़ुबिल्ला। सारे देश में आपके विरुद्ध नफरत और शत्रुता की आग भड़काई लेकिन मुक़द्दमे में जब आप के वकील ने मौलवी मुहम्मद हुसैन के खानदान के बारे में कुछ आक्षेप युक्त प्रश्न करने चाहे तो आप अलैहिस्सलाम ने सख्ती से रोक दिया। वकील मौलवी फज़लदीन साहिब कहा करते थे कि मिर्ज़ा साहिब अजीब इंसान हैं, अजीब व्यवहार के मालिक हैं कि एक व्यक्ति उनके सम्मान बल्कि जान पर हमला करता है और उसके उत्तर में जब उसकी गवाही को कमज़ोर करने के लिए कुछ प्रश्न किए जाते हैं तो आप तत्काल रोक देते हैं कि मैं ऐसे प्रश्नों की अनुमति नहीं देता। इन्हीं मौलवी मुहम्मद हुसैन के बारे में अपने एक अरबी शहर में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने यह भी फरमाया है कि-

قَطَعْتَ وِدَادًا قَدْ
غَرَسْنَاهُ فِي الصَّبَا
وَلَيْسَ فُؤَادِيْ
فِي الْوَدَادِ يُقَصِّرُ

अर्थात तूने इस मुहब्बत के वृक्ष को अपने हाथ से काट दिया है जो हमने जवानी के समय में अपने दिल में लगाया था, मगर मेरा दिल किसी अवस्था में मुहब्बत के मामले में कमी और कोताही करने वाला नहीं

(सीरत-ए-तय्यबा द्वारा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब, पृष्ठ 57-59)

बहरहाल यह तो एक उदाहरण है कि आपके मिशन को समाप्त करने के लिए बहुत सारे मुसलमान उलमा ने प्रयत्न किए, बहुत से नाम के उलमा ने आप का विरोध किया। आप पर कुफ्र के फतवे लगाए और अब तक लगाते चले आ रहे हैं। इसी का परिणाम है कि दुनिया के विभिन्न देशों में मुसलमान देशों में हमारा विरोध होता है। यह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की शिक्षा का हम पर प्रभाव है कि आज भी हम उन विरोधियों के उत्तर में उनके विरुद्ध सद्व्यवहार की कसौटी को नहीं छोड़ते और कानून को भी अपने हाथ में नहीं लेते। काश इन लोगों को समझ आ जाए। इस ज़माने के हकम और अदल (निर्णायक और इंसाफ करने वाले) और मसीह और महदी, हज़रत मिर्ज़ा गुलाम अहमद साहिब अलैहिस्सलाम ही हैं और इस्लाम के प्रचार और तौहीद की स्थापना और आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वास्तविक हुकूमत जो दिलों पर स्थापित होनी है, ज़मीनों पर नहीं दिलों पर क़ायम होनी है वह मसीह मौऊद के द्वारा ही होनी है और आप की जमाअत के द्वारा ही स्थापित होनी है न की किसी तलवार या बंदूक या शक्ति से या आतंकवाद फैलाने से और इस्लाम के नाम पर पीड़ितों को कत्ल करने से। यूरोप में जो घटनाएं हो रही हैं इस्लाम के नाम पर, लोग या संगठन कर रहे हैं। या यहां लंदन में 2 दिन पहले अत्याचार पूर्वक निर्दोषों को कत्ल किया गया है, मार्ग में चलते हुए यात्रियों पर कार चढ़ा दी। एक पुलिस वाले को कत्ल कर दिया। तो यह इसी कारण से है कि इन केवल नाम के उलमा ने लोगों का ग़लत मार्गदर्शन करके उनके दिलों में इस्लाम की सुंदर शिक्षाएं डालने के बजाय अत्याचार और हिंसा के विचार पैदा कर दिए हैं।

अत: ऐसे में हम अहमदियों का काम है जैसा कि मैं पहले भी कहता रहा हूं और अक्सर कहता हूं कि इस्लाम के हुस्न को संसार के सामने प्रस्तुत करें। जहां तक अहमियत के विरोध का संबंध है यह अहमदियत का कुछ नहीं बिगाड़ सकते। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को अल्लाह तआला ने भेजा है, इसलिए ही भेजा है कि आप को कामयाब करना है और इस्लाम अब आपके द्वारा ही फैलना है। अत: हमने इस इस्लाम को फैलाना है। क़त्ल व गारत और निर्दोषों के कत्ल करने की जो यह हरकतें हो रही हैं इन हरकतों को हमें सख्ती से हर जगह रद्द करना चाहिए। इसके विरुद्ध आवाज़ उठानी चाहिए और प्रभावित लोगों से सहानुभूति करना भी हमारा काम है।

इसके बाद हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं कि हे समस्त लोगो! सुन रखो कि यह उसकी भविष्यवाणी है जिसने ज़मीन और आसमान बनाया वह अपनी इस जमाअत को समस्त देशों में फैला देगा और हुज्जत और दलील के दृष्टिकोण से सब पर उनको विजयी करेगा। वह दिन आते हैं बल्कि निकट हैं कि दुनिया में केवल यही एक धर्म होगा जो सम्मान पूर्वक याद किया जाएगा। ख़ुदा इस धर्म और इस सिलसिले में बहुत बरकत डालेगा और हर एक जो इसके मिटाने की चिंता में रहेगा, उसको नाकाम रखेगा और यह विजय हमेशा रहेगी यहां तक की कयामत आ जाएगी। अगर आप मुझसे हंसी-ठट्ठा करते हैं तो इस हंसी-ठट्ठा से क्या हानि, क्योंकि कोई नबी नहीं जिससे हंसी ठट्ठा नहीं किया गया। अत: आवश्यक था कि मसीह मौऊद से भी हंसी-ठट्ठा किया जाता जैसा कि अल्लाह तआला फरमाता है- يٰحَسْرَةً عَلَى الْعِبَادِ مَا يَأْتِيهِمْ مِّنْ رَّسُوْلٍ إِلَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ (यासीन:31)

अत: ख़ुदा की ओर से यह निशानी है कि हर एक नबी से हंसी-ठट्ठा किया जाता है मगर ऐसा आदमी जो समस्त लोगों के सामने आसमान से उतरे और फरिश्ते भी उसके साथ हों उससे कौन हंसी-ठट्ठा करेगा। अत: इस दलील से भी बुद्धिमान समझ सकता है कि मसीह मौऊद का आसमान से उतरना केवल झूठा विचार है। याद रखो कोई आसमान से नहीं उतरेगा, हमारे सब विरोधी जो अब जीवित मौजूद हैं वे सब मरेंगे और कोई उनमें से ईसा इब्न मरियम को आसमान से उतरता नहीं देखेगा और फिर उन की औलाद जो शेष रहेगी वह भी मरेगी और उनमें से भी कोई आदमी को ईसा इब्न मरियम को आसमान से उतरता हुआ नहीं देखेगा और फिर औलाद की औलाद मारेगी और वह भी मसीह को आसमान से उतरता हुआ नहीं देखेगी। तब ख़ुदा उनके दिलों में घबराहट डालेगा कि सलीब की विजय का ज़माना भी गुज़र गया और दुनिया दूसरे रूप में आ गई मगर मरियम का बेटा ईसा अब तक आसमान से न उतरा। तब बुद्धिमान एकदम इस आस्था से दूर हो जाएँगे और अभी आज के दिन से तीसरी शताब्दी पूरी नहीं होगी कि ईसा की प्रतीक्षा करने वाले क्या मुस्लमान और क्या

शेष पृष्ठ 25 पर

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जीवनी उदारता और महान साहस के आलोक में

(मुहम्मद हमीद कौसर, नाज़िर दावत-ए-इलाल्लाह मर्कज़िया)

अल्लाह तआला क़ुर्आन करीम में फ़रमाता है:-

وَاِذْ قَالَ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ يٰبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ اِنِّيْ رَسُوْلُ اللّٰهِ اِلَيْكُمْ مُّصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيَّ مِنَ التَّوْرٰىةِ وَمُبَشِّرًا ۢ بِرَسُوْلٍ يَّاْتِيْ مِنْۢ بَعْدِي اسْمُهٗٓ اَحْمَدُ ؕ فَلَمَّا جَآءَهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ قَالُوْا هٰذَا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ

(सूर: अस्सफ़ आयत 7)

गालियाँ सुनकर दुआ दो पा के दु:ख आराम दो
किब्र की आदत जो देखो तुम दिखाओ इन्किसार
गालियाँ सुन के दुआ देता हूँ उन लोगों को
रहम है जोश में और ग़ैज़ घटाया हमने

आदरणीय सभाध्यक्ष महोदय एवं प्रतिष्ठित श्रोतागण विनीत के भाषण का शीर्षक हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का जीवनचरित्र उदारता और साहस की अधिकता की रोशनी में है।

यह आयत जो आपने सुनी है इसके बारे में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि-

وَمُبَشِّرًا ۢ بِرَسُوْلٍ يَّاْتِيْ مِنْۢ بَعْدِي اسْمُهٗٓ اَحْمَدُ

में यह संकेत है कि आखिरी ज़माने में आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का एक द्योतक प्रकट होगा। मानो वह उसका एक हाथ होगा जिसका नाम आसमान पर अहमद होगा और वह हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम के रंग में जमाली तौर पर दीन को फैलाएगा।

(अरबईन नं. 3 रूहानी ख़ज़ायन जिल्द- 17 पृष्ठ 421)

इस युग में अल्लाह तआला ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को इस्लाम के जमाली पहलू को उजागर करके दुनिया के सामने प्रस्तुत करने के लिए भेजा है। लेकिन मुश्किल यह है कि दुनिया के अक्सर लोग इस्लाम की जमाली और पुर अमन शिक्षाओं को क़बूल करने के लिए तैयार नहीं हैं। अधिकतर लोग सामने से सख्त प्रतिक्रिया दिखाते हुए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और आपकी जमाअत को बहुत दु:ख पहुँचाते रहे हैं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम उन दु:खों को पूरे धैर्य और साहस से बर्दाश्त करतो रहे। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और मुख़ालिफ़ीन की हालत को इस उदाहरण से समझा जा सकता है कि जैसे माँ अपने बीमार बच्चे के ठीक और तंदुरुस्त होने के लिए उसे कड़वी दवाई पिलाती है तो बच्चा वह दवा पीने के लिए तैयार नहीं होता। वह अपनी माँ को ही हाथों और पाँवों से मारता और नोंचता है। लेकिन समझदार माँ बच्चे की मार को बड़े धैर्य और साहस से बर्दाश्त करती है और बच्चे को उस समय तक नहीं छोड़ती जब तक कि उसे दवाई न पिला ले। इस हालत को हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम कुछ इस तरह बयान करते है:-

मुझे आदेश दिया गया है कि जहाँ तक मुझसे हो सके उन तमाम् ग़लतियों को मुसलमानों से दूर करूँ और पवित्र शिष्टाचार और शान्ति और सहिष्णुता और न्याय और तक़्वा की राहों की ओर उनको बुलाऊँ। मैं तमाम् मुसलमानों और ईसाइयों और हिन्दुओं और आर्यों पर यह बात स्पष्ट करता हूँ कि दुनिया में कोई मेरा दुश्मन नहीं है। मैं लोगों से ऐसी मुहब्बत करता हूँ कि जैसे दयालु माँ अपने बच्चों से बल्कि उससे भी बढ़कर। मैं केवल उन झूठे अक़ीदों का दुश्मन हूँ जिनसे सच्चाई का ख़ून होता है। इन्सान की हमदर्दी मेरा कर्तव्य है और झूठ और शिर्क (अनेकेश्वरवाद) और अत्याचार और हर एक दुराचार और अन्याय और अनैतिकता से विमुखता मेरा उसूल।

(अरबईन नं.1 रूहानी ख़ज़ायन जिल्द- 17 पृष्ठ 344)

पाठको! जब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने उन झूठे अक़ीदों को जिनसे सच्चाई का ख़ून होता था लोगों के सामने प्रस्तुत करके उनका खण्डन किया और सही अक़ायद प्रस्तुत किए तो आपको घोर कष्ट और कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। जिन्हें बर्दाश्त करने के लिए आपने अत्यन्त धैर्य, साहस और उदारता का उत्कृष्ट आदर्श प्रस्तुत किया। जिसके कुछ उदाहरण प्रस्तुत है:-

प्रिय पाठको! अप्रैल 1893 ई. की घटना है कि अमृतसर के निकट स्थित जन्डियाला शहर में ईसाइयों के एक बड़े लीडर डाक्टर मार्टन क्लार्क ने ईसाइयों की तरफ़ से मुसलमानों को मुबाहसे का लिखित चैलेन्ज दिया और घोषणा की कि जन्डियाला के मुसलमान अपने मज़हब के बड़े-बड़े उलमा और बुज़ुर्गान-ए-दीन को मैदान में लाकर सच्चे धर्म को परखें, अन्यथा अब चुप हो जाएँ। इस मुक़दमा की सुनवाई बटाला में उस समय के ज़िला जज गुरदासपुर अंग्रेज़ कैप्टन डग्लस की अदालत में शुरू हुई जो दस दिन तक जारी रही। बड़ी गहरी और लम्बी छानबीन के बाद ज़िला जज कैप्टन डग्लस ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को सम्मानपूर्वक बरी कर दिया और आपको संबोधित करते हुए कहा:-

क्या आप चाहते हैं कि डाक्टर हेनरी क्लार्क पर मुक़दमा चलाएँ? अगर आप मुक़दमा चलाना चाहें तो आपको इसका क़ानूनी अधिकार है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने कहा कि मैं कोई मुक़दमा नहीं चाहता। मेरा मुक़दमा आसमान पर है।

(उद्धृत सीरत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम-लेखक याक़ूब अली साहिब इर्फ़ानी)

प्रिय पाठको! इस घटना से लगभग 1300 वर्ष पूर्व इसी प्रकार की एक घोषणा मक्का शरीफ़ में उस समय हुई थी जब हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जानी दुश्मन आपके सामने खड़े थे। उनके अत्याचार का इतिहास सबके सामने था। उस समय के क़ानून और रस्मोरिवाज आपको बदला लेने का अधिकार देते थे। लेकिन आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह घोषणा की कि لَا تَثْرِيبَ عَلَيْكُمُ الْيَوْمَ। (आज तुम पर कोई पकड़ नहीं, तुम सब आज़ाद हो) ठीक उसी तरह इस ज़माने में हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दूसरी आमद के द्योतक (हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम) ने घोर कष्ट देने वाले दुश्मनों के बारे में फ़रमाया कि मैं उन पर कोई मुक़दमा नहीं करना चाहता, मेरा मुक़दमा आसमान पर है। जिस महान धैर्य, सहिष्णुता, उदारता और साहस का आदर्श हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने प्रस्तुत किया आपके ग़ुलाम ने भी वही सदाचार दिखाया।

प्रिय पाठको! हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की भविष्यवाणी को प्रत्यक्ष रूप से भी पूरा करने के लिए मस्जिद अक़्सा क़ादियान में मीनार-तुल-मसीह के निर्माण के लिए 13 मार्च सन् 1903 को एक ईंट पर दुआ करके उसकी बुनियाद रखी। जब इसके निर्माण के बारे में क़ादियान के मुख़ालिफ़ों को पता लगा तो उन्होंने शासन के अधिकारियों से शिकायत की और इसका निर्माण रुकवाने की हर सम्भव कोशिश की। अत: छानबीन और हालात का निरीक्षण करने के लिए बड़े अफसरों ने 8 मई 1903 ई को तहसीलदार साहिब बटाला को कादियान भिजवाया मस्जिद मुबारक के साथ वाले कमरे बैतुल फ़िकर में तहसीलदार की हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से मुलाक़ात हुई. उस समय शिकायत करने वाले भी मौजूद थे। हुज़ूर ने तहसीलदार को मीनार-तुल-मसीह के निर्माण का उद्देश्य भी बताया। शिकायत करने वालों में से बुड्ढामल भी थे जो उस समय साथ मौजूद थे। हुज़ूर ने तहसीलदार साहिब को सम्बोधित करते हुए कहा कि:- बुड्ढामल साहिब जिन्होंने शिकायत की है यह मुझे बचपन से जानते हैं इन से पूछ लें कि बचपन से लेकर आज तक क्या कभी ऐसा हुआ है कि मुझे इन्हें फ़ायदा पहुँचाने का अवसर मिला हो और मैंने इन्हें फ़ायदा न पहुँचाया हो और फिर इन्हीं से पूछें कि क्या कभी ऐसा हुआ है कि इन्हें मुझे कष्ट पहुँचाने का कोई अवसर मिला हो और इन्होंने मुझे कष्ट न पहुँचाया हो। वर्णन करने वाले कहते हैं कि बुड्ढामल साहिब शर्म से नीचे सिर झुकाए हुए बैठे रहे और एक शब्द भी न कह सके।

प्रिय पाठको! इस घटना से हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की उदारता और साहस का पता चलता है। बचपन से जवानी और जवानी से बुढ़ापे तक लगभग 50 साल बुड्ढामल साहिब समय-समय पर आपको कष्ट पहुँचाते रहे, लेकिन आप उनसे सदैव सद्व्यवहार करते रहे और जमाअत के लोगों को नसीहत की कि:-

गालियाँ सुन के दुआ दो पा के दु:ख आराम दो

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते है:- हमारा यह उसूल है कि समस्त मानवजाति से हमदर्दी करो। अगर एक व्यक्ति एक हिन्दू पड़ोसी को देखता है कि उसके घर में आग लग गई और यह नहीं उठता कि आग बुझाने में मदद करे तो मैं सच-सच कहता हूँ कि वह मुझ से नहीं है। यदि हमारे मुरीदों में से एक व्यक्ति यह देखता है कि एक ईसाई को कोई क़त्ल करता है और वह उसके छुड़ाने के लिए मदद नहीं करता तो मैं तुम्हें बिल्कुल सही कहता हूँ कि वह हम में से नहीं है।

(सिराज-ए-मुनीर, रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 12 पृष्ठ 28)

प्रिय पाठको! हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मुख़ालिफ़ों में से उनके सगे चाचा अबू लहब और कई क़रीबी रिश्तेदार मुख़ालिफ़त में आगे-आगे रहते थे। इसी तरह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की मुख़ालिफ़त करने और आपको दु:ख देने में आपके चचेरे भाई इमामदीन और मिर्ज़ा निज़ामदीन आगे-आगे रहते थे। वे कभी-कभी कोई ऐसा नीच आदमी इस काम के लिए लगा देते कि वह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को गालियाँ देता रहे। अत: कभी-कभी ऐसा आदमी सारी रात गालियाँ देता रहता। अन्तत: जब सहरी का समय होता तो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम हज़रत उम्मुल मोमिनीन रज़ियल्लाहु अन्हा को कहते कि अब उसको खाने को कुछ भिजवा दो, थक गया होगा। उसका गला सूख गया होगा। (हज़रत रसूल बीबी साहिबा पत्नी हाफ़िज़ हामिद अली साहिब) ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने कहा कि ऐसे कमबख़्त को कुछ नहीं देना चाहिए तो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि:- अगर कोई बदी करे तो ख़ुदा देखता है हमारी तरफ़ से कोई बात नहीं होनी चाहिए।

(उद्धृत सीरतुल महदी भाग 4 पृष्ठ 103 रिवायत नं। 1130)

इन्हीं मिर्ज़ा इमामदीन और मिर्ज़ा निज़ामदीन दोनों भाइयों ने 5 जनवरी सन् 1900 ई. को हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और आपके सहाबा को दु:ख देने और तंग करने के लिए मस्जिद मुबारक के नीचे से जाने वाली गली को ईंटों से दीवार बनाकर बन्द कर दिया था। जिससे हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और आपके सहाबा और मेहमानों को दूसरे लम्बे चक्करदार और ऊबड़-खाबड़ रास्ते से होकर मस्जिद मुबारक जाना पड़ता था। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अपने कुछ सहाबियों को मिर्ज़ा इमामुद्दीन के पास भिजवाया कि उनको नर्मी से समझाएं कि वे रास्ता बंद न करें इससे मेरे मेहमानों को बहुत तकलीफ़ हो रही है और यह पेशकश की कि अगर आप चाहें तो मेरी कोई और जगह देखकर क़ब्ज़ा कर लें। मिर्ज़ा इमामदीन यह सुनते ही ग़ुस्से से आगबबूला होकर कहने लगा कि वह (अर्थात् हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम) स्वयं क्यों नहीं आया। मैं तुम लोगों को क्या जानता हूँ। फिर व्यंग कसते हुए कहा कि जब से वह्यी आनी शुरू हुई है, मालूम नहीं कि उसे क्या हो गया है?

आपने ज़िले के डिप्टी कमिश्नर गुरदासपुर के पास अपने कुछ प्रतिनिधि भेजकर अपनी परेशानियाँ दूर करने की कोशिश की। लेकिन उसका व्यवहार भी बहुत मुख़ालिफ़ाना साबित हुआ। जब इस मुश्किल के दूर करने के सारे रास्ते बन्द नज़र आने लगे तो आपकी ओर से जिला जज गुरदासपुर की अदालत में एक मुक़दमा दायर कराया गया। इस मुक़दमे का फ़ैसला 12 अगस्त सन् 1901 ई. को हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के पक्ष में हुआ और जिला जज ने मिर्ज़ा इमामदीन (प्रतिवादी) पर मुक़दमे पर ख़र्च होने वाली रक़म के अलावा एक सौ रुपए का हर्जाना भी डाल दिया।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के वकील ने हुज़ूर की सलाह और आज्ञा के बिना प्रतिवादी पर ख़र्चा की डिग्री जारी करवा दिया। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम उस समय कुछ दिनों के लिए गुरदासपुर में ठहरे हुए थे। तभी आपकी ग़ैर मौजूदगी में एक सरकारी आदमी क़ादियान आया। उस समय मिर्ज़ा इमामदीन की मृत्यु हो चुकी थी और मिर्ज़ा निज़ामदीन साहिब ज़िन्दा थे, मगर उनकी हालत उन मुख़ालिफ़तों के कारण इतनी कमज़ोर हो चुकी थी कि वह 144 रुपए 5 आना 7 पाई जुर्माना की रक़म नहीं भर सकते थे और क़ुर्क़ी के सिवा कोई चारा न था। इसलिए मिर्ज़ा निज़ामदीन साहिब ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सेवा में माफ़ी की दरख़्वास्त की।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को जब गुरदासपुर में इसकी सूचना मिली तो आपने फ़रमाया कि मुझे आज रात नींद नहीं आएगी, इसी क्षण आदमी क़ादियान भेजा जाए जो तुरन्त यह जाकर कह दे कि हमने यह ख़र्चा माफ़ कर दिया। इसके साथ ही हुज़ूर ने क्षमा भी माँगी कि मुझे बताए बिना डिग्री जारी करने का आदेश क़ादियान पहुँचा है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अपनी हालत का नक्शा खींचते हुए बयान फ़रमाते हैं कि:- मैं क़सम खाकर कहता हूँ कि अगर कोई आदमी जिसने मुझे हज़ारों बार दज्जाल और कज़्ज़ाब कहा हो और मेरी मुख़ालिफ़त में हर तरह की कोशिश की हो और वह सुलह का इच्छुक हो तो मेरे दिल में यह विचार भी नहीं आता और नहीं आ सकता कि उसने मुझे क्या कहा था और मेरे साथ क्या सुलूक किया था।

(मल्फ़ूज़ात जिल्द- 9 पृष्ठ 74 संस्करण 1985 ई. मुद्रित ब्रिट्रेन)

प्रिय पाठको! 28 जनवरी सन् 1903 ई. एक मुख़ालिफ़ मौलवी करमदीन ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ख़िलाफ़ मानहानि का एक झूठा मुक़दमा दायर किया। यह मुक़दमा गुरदासपुर में चन्दूलाल आर्य मजिस्ट्रेट प्रथम की अदालत में पेश था जो जमाअत से बहुत ईर्ष्या-द्वेष रखता था। मुक़दमा की सुनवाई के दौरान हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से उसका व्यवहार ईर्ष्याजनक रहा। आप इस सुलूक को बड़े सब्र से बर्दाश्त करते रहे। एक बार मुक़दमा के दौरान हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का बयान होना था। उस दिन हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को देखने और आपका बयान सुनने के लिए बहुत से लोग आए हुए थे। अत: मजिस्ट्रेट चन्दूलाल ने उस दिन बाहर मैदान में कचेहरी लगाई और उसने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से प्रश्न किया कि क्या आपका निशान नुमाई का भी दावा है* हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने बड़ी दिलेरी से कहा हाँ। थोड़ी देर के बाद बड़े जोश से फ़रमाया आप जो निशान चाहें मैं इस समय दिखा सकता हूँ। यह जवाब सुनकर मजिस्ट्रेट सहम गया और लोगों पर उस ऐलान का बड़ा असर हुआ। एक दूसरे अवसर पर सुनवाई के दौरान मजिस्ट्रेट ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से प्रश्न किया कि اِنِّی مُھِیۡنٌ مَنۡ اَرَادَ اِھَانَتَکَ क्या यह ख़ुदा ने आपको बताया है हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया:- यह अल्लाह की वाणी है और उसका मुझसे वादा है। अल्लाह ने मुझे संबोधित करके कहा है "जो तेरा अपमान चाहेगा मैं उसको अपमानित कर दूंगा।" मजिस्ट्रेट कहने लगा जो आपका अपमान करेगा अल्लाह उसे अपमानित कर देगा?

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया- अवश्य। मजिस्ट्रेट ने कहा, अगर मैं करूँ? हुज़ूर ने बड़ी दिलेरी से कहा, चाहे कोई भी करे। मजिस्ट्रेट ने दूसरी और तीसरी बार भी यही प्रश्न किया। हुज़ूर बार-बार यही जवाब देते रहे कि, चाहे जो कोई करे। फिर मजिस्ट्रेट चुप हो गया।

मजिस्ट्रेट लाला चन्दूलाल तो ख़ामोश हो गया मगर वह ख़ुदा जिसने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से वादा किया था उसने चन्दूलाल को दिखा दिया कि यह वादा सबसे बड़े हाकिम ख़ुदा की ओर से था। हुकूमत ने मस्लहत के आधार पर चन्दूलाल को उसके पद से पदच्युत करके नीचे दर्जे का जज बनाकर मुल्तान भेज दिया। कुछ समय के बाद वह पेंशन लेकर लुधियाना आ गया। यहाँ उसकी हालत बहुत ख़राब हो गयी और फिर मानसिक रोग में ग्रस्त होकर मृत्यु पा गया। ख़ुदा के प्यारों को अपमानित करने का यह भी एक निशान था। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते है:-

क़ुदरत से अपनी ज़ात
का देता है हक़ सुबूत
उस बे निशाँ की चेहरा नुमाई यही तो है

प्रिय पाठको! हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने ख़ुदा के आदेशानुसार 23 मार्च सन् 1889 ई. को जमाअत अहमदिया की बुनियाद पंजाब के मशहूर शहर लुधियाना में रखी। इस शहर में वर्षों पहले आपकी मुख़ालिफ़त के बारे में एक ब्रह्मलीन बुज़ुर्ग गुलाब शाह साहिब ने पेशगोई की थी कि आने वाला ईसा अर्थात् हज़रत मसीह मौऊद लुधियाना आएगा और यहाँ उसकी घोर मुख़ालिफ़त होगी। अत: ऐसा ही हुआ। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम तीन-चार बार लुधियाना गए और वहाँ हर बार मौलवियों ने घोर मुख़ालिफ़त की और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने बड़ी धैर्य, उदारता और साहस का अनुकरणीय आदर्श प्रस्तुत किया और अल्लाह तआला ने भी आपको सब्र का फल दिया।

कई मुख़ालिफ़ और दुश्मन हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के पास आते और बात-बात में झगड़ा करते और उलझते रहते। कुछ परीक्षा लेने, कुछ आज़माइश करने और कुछ देखने के लिए आते थे। एक दिन मुख़ालिफ़ों ने पाँच आदमियों को बहकाकर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मकान पर भेजा और कहा कि उस मकान में एक आदमी है जो तमाम् नबियों को गालियाँ देता है और क़ुर्आन और रसूल को नहीं मानता। वे मुख़ालिफ़ पूरे क्रोध और ग़ुस्से से भरे हुए एकदम उस मकान में घुस गए जिसमें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ठहरे हुए थे। उस समय एक अहमदी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से क़ुर्आन करीम की एक आयत का अर्थ पूछ रहा था। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने उस आयत की ऐसी व्याख्या की कि वे लोग जो हमला करने आए थे बहुत देर तक चुप बैठे सुनते रहे। जब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम व्याख्या कर चुके तो हमले की नीयत से जाने वाले मुख़ालिफ़ों ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से हाथ मिलाकर सलाम किया और आपके हाथों को चूमकर कहा कि आपकी मुख़ालिफ़त और दुश्मनी करने वालों ने हमें धोखा दिया। जो आपको काफ़िर कहते हैं वे ख़ुद काफ़िर हैं और यदि आप मुसलमान नहीं तो कोई भी मुसलमान नहीं। जब वे लोग वापिस आए तो उनको भिजवाने वाले मुख़ालिफ़ों ने कहा कि, मिर्ज़ा जादूगर है* जो उसके पास जाता है वह उसी का हो रहता है। उसके पास कोई न जाए।

(उद्धृत तारीख़-ए-अहमदियत जिल्द 1 पृष्ठ 394,
तज़्किरतुल महदी जिल्द 1 पृष्ठ 104-105)

लुधियाना में ही एक ग़ैर अहमदी मौलवी ने बाज़ार में खड़े होकर बड़े जोश से कहा कि मिर्ज़ा काफ़िर है और यदि कोई उसको क़त्ल कर डालेगा तो वह बहुत बड़ा सवाब पाएगा और सीधा जन्नत में जाएगा। एक देहाती गँवार जो हाथ में लट्ठ लिए हुए उसकी तक़रीर सुन रहा था उस मौलवी से बहुत प्रभावित हुआ और ख़ामोशी से हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मकान का पता लगाते हुए आपके घर तक पहुँच गया। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम उस समय दीवान ख़ाना में बैठे तक़रीर कर रहे थे और कुछ अहमदी और ग़ैर अहमदी तक़रीर सुन रहे थे। वह देहाती गँवार ने भी काँधे पर रखे हुए कमरे में प्रवेश किया और दीवार के साथ खड़े होकर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम पर क़ातिलाना हमला करने के लिए उचित अवसर की प्रतीक्षा करने लगा। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने उसकी ओर कोई ध्यान न दिया और अपनी तक़रीर जारी रखी। वह भी सुनने लगा। कुछ मिन्टों के बाद उसके दिल पर उस तक़रीर का ऐसा असर हुआ

कि उसने अपने कन्धे से लाठी उतारकर ज़मीन पर रख दी और पूरी तक़रीर सुनने के लिए ज़मीन पर बैठ गया। जब तक़रीर ख़त्म हुई तो मज्लिस में से एक आदमी ने खड़े होकर कहा कि हुज़ूर आपका दावा मेरी समझ में आ गया और अब मैं हुज़ूर को सच्चा समझता हूँ और आपके मुरीदों में दाख़िल होना चाहता हूँ। इस पर वह देहाती गँवार जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को क़त्ल करने के इरादे से आया था, आगे बढ़कर बोला कि मैं एक मुख़ालिफ़ मौलवी से प्रभावित होकर आपको क़त्ल करने आया था पर आपकी तक़रीर मुझे बहुत पसन्द आयी। आपकी बातें सुनने के बाद मुझे यह विश्वास हो गया कि ग़ैर अहमदी मौलवी की तक़रीर अकारण दुश्मनी से भरी हुई थी। आप नि:सन्देह सच्चे हैं और मैं भी आपके मुरीदों में दाख़िल होना चाहता हूँ। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने उसकी बैअत क़बूल फ़रमा ली। (उद्धृत ज़िक्रे हबीब- संकलनकर्ता हज़रत मुफ़्ती मुहम्मद सादिक़ साहिब पृष्ठ 14)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने भी जमाअत के हर व्यक्ति को मुख़ालिफ़ों की मुख़ालिफ़त के मुक़ाबले पर अत्यधिक धैर्य, साहस और उदारता का परिचय प्रस्तुत करने की नसीहत करते हुए फ़रमाया:-

तुम देखोगे कि इन्हीं में से क़तरात-ए-मुहब्बत टपकेंगे
बादल आफ़ात-व-मसाइब के छाते हैं अगर तो छाने दो
जब सोना आग में पड़ता है तो कुन्दन बन के निकलता है
फिर गालियों से क्यों डरते हो दिल जलते हैं तो जल जाने दो

प्रिय सज्जनो! अल्लाह तआला ने क़ुर्आन मजीद में और हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हदीस में आख़िरी ज़माने में प्लेग की महामारी फैलने के बारे में भविष्यवाणी की थी और यह भी फ़रमाया था कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अर्थात् इमाम महदी के प्रकटन के समय उनकी सच्चाई के लिए रमज़ान के महीने में चाँद और सूरज को ग्रहण लगेगा। अत: निर्धारित तिथियों में वह ग्रहण लगा और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अर्थात् इमाम महदी की सच्चाई सूर्य की भाँति स्पष्ट हो गयी। अल्लाह तआला ने क़ुर्आन मजीद में भी फ़रमाया था कि:-

وَإِذَا وَقَعَ الْقَوْلُ عَلَيْهِمْ أَخْرَجْنَا لَهُمْ دَابَّةً مِّنَ الْأَرْضِ تُكَلِّمُهُمْ

(सूर: अल नमल आयत 83)

जब उन पर आदेश चरितार्थ हो जाएगा तो हम उनके लिए धरती से एक कीड़ा निकालेंगे जो उनको काटेगा।

चाँद-सूरज के ग्रहण के बाद अल्लाह तआला ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को बताया कि यदि लोगों ने इस निशान से फ़ायदा न उठाया और तुझे क़बूल न किया तो उन पर एक बड़ी विपत्ति आएगी। और इस भविष्यवाणी को पूरा करने के लिए आपके दिल में तहरीक हुई कि आप एक विपत्ति के लिए दुआ करें। अत: आपने सन् 1894 ई. में एक अरबी क़सीदा प्रकाशित किया जिसमें अपनी इस तमन्ना और दुआ का वर्णन किया:- -

فَلَمَّا طَغَى الفِسقُ المُبِيدُ بِسَيلِه
تَمَنَّيتُ لَو كَانَ الوَبَاءُ لَمُتَبِّرُ
فَإِنَّ هَلاَكَ النَّاسِ عِندَ أُولِى النُّهٰى
آحَبُّ وَ اَولٰى مِن ضَلاَلٍ يُدَسِّرُ

अर्थात् जब तबाह कर देने वाला दुराचार एक तूफ़ान की तरह बढ़ गया तो मैंने अल्लाह तआला से चाहा कि काश एक महामारी आए जो लोगों को तबाह कर दे क्योंकि बुद्धिमानों के निकट लोगों का मर जाना उससे अधिक पसंदीदा और अच्छा समझा जाता है कि वे तबाह कर देने वाली गुमराही में लिप्त हो जाएँ।

जब यह भविष्यवाणी पूरी हुई और प्लेग ने हिन्दुस्तान और पंजाब में तबाही मचा दी और लोग महामारी से कीड़े-मकोड़ों की तरह मरने लगे तो आपने बड़ी उदारता, साहस और हमदर्दी के जोश से प्लेग के दूर होने के लिए दुआएँ शुरू कर दीं। हज़रत मौलवी अब्दुल करीम साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु वर्णन करते हैं कि जिन दिनों पंजाब में महामारी ज़ोरों पर थी और एक-एक दिन में हज़ारों आदमी इस महामारी का शिकार हो रहे थे। उन दिनों उन्होंने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को यह दुआ करते हुए सुना कि, हे ख़ुदा अगर ये लोग प्लेग के अज़ाब (प्रकोप) से मर गए तो फिर तेरी इबादत कौन करेगा?

प्रिय पाठको! यदि कोई दुनियादार होता तो वह ख़ुश होता और लोगों से गर्व से यह कहता कि देखो तुमने मुझे झुठलाया तो कैसे प्लेग से मर रहे हो। लेकिन ख़ुदा के उस मसीह मौऊद की सहृदयता और साहस देखिए कि उससे मुख़ालिफ़ों की मौत भी बर्दाश्त नहीं हो रही। आप उनके लिए भी दुआएँ कर रहे हैं कि, हे अल्लाह! लोगों को इस महामारी से बचा ले, इनको हिदायत दे ताकि ये तेरी इबादत करने वाले बन जाएँ। अत: अल्लाह तआला ने आपकी दुआ सुनी और उस महामारी के प्रकोप को दूर कर दिया।

इससे पूर्व डाक्टर हेनरी मार्टन क्लार्क की ओर से दायर मुक़दमा का वर्णन हो चुका है। इस मुक़दमा की एक घटना यह है कि फ़िर्क़ा अहले हदीस के लीडर मौलवी मुहम्मद हुसैन साहिब बटालवी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की दुश्मनी में इतना आगे बढ़ गए थे कि वे अदालत में ईसाइयों की सहायता और समर्थन के लिए हाज़िर हुए और जितने झूठे और निराधार आरोप किसी पर लगाए जा सकते हैं उन्होंने अदालत में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम पर लगाए। लेकिन जब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के वकील फ़ज़लदीन साहिब ने मौलवी मुहम्मद हुसैन साहिब बटालवी से एक प्रश्न इस प्रकार का किया कि जिससे उनकी शराफ़त या चरित्र पर धब्बा लगता था तो वहाँ मौजूद लोगों ने आश्चर्य से देखा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अपनी कुर्सी से उठे और फ़ज़लदीन साहिब के मुँह पर हाथ रख दिया और कहा कि मेरी ओर से इस प्रकार का प्रश्न करने की न तो हिदायत है और न ही आज्ञा। अगर आप अपनी ज़िम्मेदारी और न्यायालय की आज्ञा पर पूछना चाहें तो आपको अधिकार है। इस पर स्वभावत: डिप्टी कमिश्नर साहिब को इच्छा हुई और उन्होंने अपने मिस्लख़्वाँ राजा ग़ुलाम हैदर ख़ाँ साहिब से पूछा कि क्या तुम उस प्रश्न के बारे में कुछ जानते हो, तो उसने कहा नहीं। दोपहर में भोजनावकाश के समय राजा ग़ुलाम हैदर ख़ाँ साहिब ने शेख़ रहमतुल्लाह साहिब के द्वारा हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से इस प्रश्न के बारे में मालूम करवाया। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने बताया कि मौलवी मुहम्मद हुसैन साहिब के पिता का एक पत्र हमारे पास है जिसमें कुछ विवाह के हालात और मौलवी मुहम्मद हुसैन की बदसुलूकियों के क़िस्से हैं जो बहुत आपत्तिजनक हैं। हम कदापि नहीं चाहते कि उस क़िस्से का वर्णन मिस्ल में किया जाए।

प्रिय पाठको! जब संस्थापक जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब ने अल्लाह तआला के आदेश से *मसीह मौऊद* होने का ऐलान किया तो मौलवी मुहम्मद हुसैन बटालवी ही वह पहला आदमी था जिसने आपको झूठा और काफ़िर कहा और कुफ्र का फ़त्वा तैयार करके अपने पक्षधर मौलवियों के हस्ताक्षर करवाए। फिर लोगों को आपके ख़िलाफ़ बहकाया। इन सारे विरोध और कष्टों के बावजूद जब उसकी झूठी प्रतिष्ठा को अदालत के सामने मिट्टी में मिला देने का समय आया तो आपने अपने वकील को मना कर दिया और उसका मामला अल्लाह के सुपुर्द कर दिया।

प्रिय पाठको! हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने 118 वर्ष पहले 29 दिसम्बर सन् 1900 ई. को मुख़ालिफ़ीन अहमदियत को चैलेन्ज देते हुए फ़रमाया था कि, "इस आसमानी काम को क्या इन्सान रोक सकता है" भला यदि कोई ताक़त है तो रोको, और वे सारे छल और प्रपंच जो नबियों के मुख़ालिफ़ करते रहे हैं वे सब करो और कोई योजना न छोड़ो, नाखूनों टक जोर लगाओ इतनी बद्दुआएँ करो कि मौत तक पहुँच जाओ फिर देखो कि क्या बिगाड़ सकते हो"।

(अरबईन नं. 4 रूहानी ख़ज़ायन जिल्द- 17 पृष्ठ 473)

हे अहमदियत की मुख़ालिफ़त करने वालो * पिछले 118 साल में जमाअत अहमदिया को जड़ से मिटाने के लिए आप लोगों ने कोई कसर नहीं छोड़ी। पहले मौलवियों ने फिर संस्थाओं ने फिर सरकारों ने फिर अपने आपको मुसलमान कहलाने वाले संयुक्त इस्लामी जगत ने जमाअत पर कुफ्र के फ़त्वे लगाए। अहमदियों को तबाह और बर्बाद करने के षड़यन्त्र रचे। नाख़ूनों तक ज़ोर लगाया। अब ख़ुदा को हाज़िर नाज़िर जानकर गवाही दो कि* क्या आप लोग अहमदियत को मिटाने में कामयाब हुए* या फिर आपके तमाम् षड़यन्त्रों के बावजूद जमाअत अहमदिया एक के बाद दूसरी तरक़्क़ी की मन्ज़िलें तय करती चली गई और आप लोगों के तमाम् षड़यनत्र नाकाम और नामुराद होते चले गए। आप लोगों ने मुख़ालिफ़त में नाख़ूनों तक ज़ोर लगाकर देख लिया। लेकिन क़ुर्आन करीम में वर्णित अल्लाह तआला के वादा كَتَبَ اللّٰهُ لَأَغْلِبَنَّ أَنَا وَرُسُلِي (अनुवाद-अल्लाह ने लिख रखा है कि मैं और मेरे पैग़म्बर अवश्य ग़ालिब आएँगे) के अनुसार हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ही ग़ालिब आए और आपकी जमाअत दीनी, रूहानी और अख़्लाक़ी लिहाज़ से दुनिया में ग़लबा पाती जा रही है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि "मुख़ालिफ़ लोग व्यर्थ में अपने आपको तबाह कर रहे हैं। मैं वह पौधा नहीं हूँ कि उनके हाथ से उखड़ सकूँ। अगर उनके अगले और पिछले और उनके ज़िन्दे और मुर्दे सब एकत्र हो जाएँ और मेरे मरने के लिए दुआ करें तो ख़ुदा उन सारी दुआओं को लानत बनाकर उनके मुँह पर मारेगा। देखो सैकड़ों बुद्धिमान आप लोगों की जमाअत में से निकलकर हमारी जमाअत में मिलते जाते हैं। आसमान पर एक शोर बरपा है और फ़रिश्ते साफ़ दिलों को खींचकर इस तरफ़ ला रहे हैं।"

(अरबईन नं. 4, रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 17- पृष्ठ 473)

अन्त में दुआ है कि अल्लाह तआला जमाअत के सारे लोगों को हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के आदर्शों का अनुसरण करते हुए धैर्य, सहिष्णुता और साहस के साथ मुख़ालिफ़ों की मुख़ालिफ़त बर्दाश्त करने और लोगों तक ख़ुदा का सन्देश पहुँचाने की शक्ति प्रदान करे ताकि अधिक से अधिक स्वच्छ प्रकृति लोग जमाअत अहमदिया में शामिल होकर अपना लोक-परलोक सँवारते चले जाएँ और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की इस दूरअंदेश आवाज़ पर कान धरते चले जाए:-

सिद्क़ से मेरी तरफ़ आओ इसी में ख़ैर है।
हैं दरिन्दे हर तरफ़ मैं आफ़ियत का हूँ हिसार।।

☆ ☆ ☆

आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मुहब्बत में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का पवित्र कलाम

वह पेशवा हमारा जिससे है नूर सारा,
नाम उसका है मुहम्मद दिलबर मेरा यही है ॥
सब पाक हैं पयंबर इक दूसरे से बढ़ कर,
लेकज़ ख़ुदाए बरतर ख़ैरुल वारा यही है॥
पहलों से खूबतर है खूबी में इक कमर है,
उस आर हर इक नज़र है बदरुददुजा यही है॥
पहले तो आह में हारे पार उसने हैं उतारे,
मैं जाऊँ उसके वारे बस नाख़ुदा यही है॥
पर्दे जो थे हटाए अंदर की रह दिखाए,
दिल यार से मिलाए वह आशना यही है॥
वह यार लामकानी वह दिलबरे निहानी,
देखा है हमने उससे बस रहनुमा यही है॥
वह आज शाह-ए-दीं है वह ताज-ए-मुरसलीं है,
वह तय्यबो अमीं है उसकी सना यही है॥
उस नूर पर फिदा हूँ उसका ही मैं हुआ हूँ,
वह है मैं चीज़ क्या हूँ बस फैसला यही है॥
वह दिलबरे यागाना इल्मों का है खज़ाना,
बाक़ी है सब फसाना सच बेखता यही है॥
सब हमने उससे पाया शहीद है तू ख़ुदाया,
वह जिसने हक़ दिखाया वह मै लिक़ा यही है॥

☆ ☆ ☆

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सच्चाई, इन्ज़ारी और तब्शीरी भविष्यवाणियों के आलोक में

मौलाना सुल्तान अहमद ज़फर, नाज़िम इरशाद वक़्फ़-ए-जदीद क़ादियान

अनुवादक: फरहत अहमद आचार्य

अल्लाह तआला क़ुरआन मजीद में फ़रमाता है:-

وَمَا نُرْسِلُ الْمُرْسَلِيْنَ اِلَّا مُبَشِّرِيْنَ وَمُنْذِرِيْنَ ۚ فَمَنْ اٰمَنَ وَاَصْلَحَ فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ○ وَالَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا يَمَسُّهُمُ الْعَذَابُ بِمَا كَانُوْا يَفْسُقُوْنَ

(सूरतुल अनआम: 49-50)

عٰلِمُ الْغَيْبِ فَلَا يُظْهِرُ عَلٰى غَيْبِهٖٓ اَحَدًا ○ اِلَّا مَنِ ارْتَضٰى مِنْ رَّسُوْلٍ

(सूरतुल जिन्न: 27-28)

आदरणीय जलसा के अध्यक्ष महोदय और समस्त पाठकगण! अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहे व बरकातहू, जैसा कि आपने पढ़ लिया है कि मेरे भाषण का विषय है हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सच्चाई, सचेत करने वाली और ख़ुशख़बरी देने वाली भविष्यवाणियों के आलोक में। मैंने आज जिन आयतों की तिलावत की है उनमें अल्लाह तआला फ़रमाता है कि- अल्लाह तआला की ओर से आने वाले नबियों और रसूलों को बहुत सी ऐसी परोक्ष की ख़बरें दी जाती हैं जिनमें ख़ुशख़बरी देने वाली और सचेत करने वाली भविष्यवाणियां होती हैं और जो लोग इन नबियों पर ईमान लाकर अपना सुधार कर लेते हैं अल्लाह तआला उनके जीवन से हर प्रकार के भय को दूर कर के हर गम से मुक्ति प्रदान करता है और जो लोग उन पर ईमान नहीं लाते और बुराइयों में लिप्त रहते हैं उन्हें अपने दंड का मज़ा चखाता है। आदरणीय पाठकगण हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम उन लोगों को जो आप के दावे के बारे में संदेह ग्रस्त थे, संबोधित करते हुए फरमाते हैं कि मेरे दावे के बारे में अगर संदेह हो और सच्चाई जानने की इच्छा भी हो तो इसका दूर होना बहुत सरल है क्योंकि हर एक नबी की सच्चाई तीन प्रकार से पहचानी जाती है। प्रथम यह कि- यह देखना चाहिए कि जिस समय वह नबी या अवतार आया है बुद्धि गवाही देती है या नहीं कि इस समय उसके आने की आवश्यकता थी या नहीं? और इंसानों की वर्तमान हालत चाहती थी या नहीं कि ऐसे समय में कोई सुधारक पैदा हो?

दूसरे- पहले नबियों की भविष्यवाणियां अर्थात यह देखना चाहिए कि पहले किसी नबी ने उसके बारे में या उसके समय के बारे में किसी के प्रकट होने की भविष्यवाणी की है या नहीं?

तीसरे- अल्लाह तआला की सहायता अर्थात यह देखना चाहिए कि उसके साथ अल्लाह तआला की सहायता है भी या नहीं? यह तीन निशानियां अल्लाह तआला की ओर से आने वाले की सच्चाई पहचानने के लिए हमेशा से निर्धारित हैं। अब हे मित्रो! ख़ुदा ने तुम पर रहम करके यह तीनों निशानियां मेरी सच्चाई के लिए एक ही जगह एकत्र कर दी हैं। अब चाहे तुम स्वीकार करो या ना करो। अगर बुद्धि की दृष्टि से नज़र डालो तो बुद्धि फरियाद कर रही है और रो रही है कि मुसलमानों को इस समय एक आसमानी सुधारक की आवश्यकता है। आंतरिक और बाहरी दोनों अवस्थाएँ अत्यंत भयानक है और मुसलमान मानो एक गधे के करीब खड़े हैं या एक तूफान के किनारे पर आ पड़े हैं। अगर पहली भविष्यवाणियों को तलाश करो तो दानियाल नबी ने मेरे बारे में और मेरे इस ज़माने के बारे में भविष्यवाणी की है। आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने भी फरमाया है कि इसी उम्मत में से मसीह मौऊद पैदा होगा। अगर किसी को मालूम न हो तो सही बुखारी और सही मुस्लिम को देख लें और सदी के आरंभ में मुजद्दिद की भविष्यवाणी भी पढ़ ले और अगर मेरे बारे में अल्लाह तआला की सहायता तलाश करना चाहे तो याद रहे कि अब तक हज़ारों निशान प्रकट हो चुके हैं।

(रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 20 पृष्ठ 241)

अत: हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ख़ुदा तआला की ओर से प्रदान होने वाली बहुत सी परोक्ष की ख़बरों और भविष्यवाणियों को अपनी सच्चाई की दलील के तौर पर प्रस्तुत करते हुए फरमाते हैं कि कोई ऐसी भविष्यवाणी मेरी नहीं है कि वह पूरी नहीं हुई या उसके दो हिस्सों में से एक हिस्सा पूरा नहीं हो चुका। अगर कोई तलाश करता करता मर भी जाए तो ऐसी कोई भविष्यवाणी जो मेरे मुंह से निकली हो उसको नहीं मिलेगी जिसके बारे में वह कह सकता हो कि खाली गई। मगर बेशर्मी से या अज्ञानता से जो चाहे कहो। और मैं दावे से कहता हूं कि हज़ारों मेरी ऐसी खुली खुली भविष्यवाणियां है जो अत्यंत स्पष्टता से पूरी हो गई जिनके लाखों इंसान गवाह हैं। उनके उदाहरण अगर पूर्व नबियों में तलाश किए जाएँ तो सिवाय आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के किसी और जगह उनकी मिसाल नहीं मिलेगी।

(रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 19 पृष्ठ 6)

आदरणीय पाठकगण! सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की भविष्यवाणियां भी क़ुरआन मजीद में वर्णित नबियों की भविष्यवाणियों के समान ख़ुशख़बरी देने वाली और सचेत करने वाली दोनों प्रकार की हैं समय की कमी के कारण विनीत आप की हज़ारों भविष्यवाणियों में से इंशाअल्लाह कुछ प्रस्तुत करने का प्रयत्न करेगा।

ख़ुशख़बरी देने वाली भविष्यवाणियां

जमाअत अहमदिया की उन्नति कि भविष्यवाणी

मार्च 1882 ईसवी में मामूरियत (अल्लाह द्वारा आदेशित) के बारे में आपको सबसे पहला इल्हाम इन शब्दों में हुआ-

يَا اَحْمَدُ بَارَكَ اللّٰهُ فِيْكَ مَا رَمَيْتَ اِذْ رَمَيْتَ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ رَمٰى ۔ اَلرَّحْمٰنُ عَلَّمَ الْقُرْاٰنَ لِتُنْذِرَ قَوْمًا مَّا اُنْذِرَ اٰبَآءُ هُمْ وَلِتَسْتَبِيْنَ سَبِيْلَ

اَلْمُجْرِمِيْنَ قُلْ اِنِّيْ اُمِرْتُ وَاَنَا اَوَّلُ الْمُؤْمِنِيْنَ

अर्थात हे अहमद ख़ुदा ने तुझ में बरकत रख दी है, जो कुछ तूने चलाया तूने नहीं चलाया बल्कि ख़ुदा ने चलाया। वह ख़ुदा है जिसने तुझे क़ुरआन सिखलाया अर्थात उसके वास्तविक अर्थों पर तुझे सूचना दी ताकि तू उन लोगों को डराए जिनके बाप दादा नहीं डराए गए, ताकि मुजरिमों का मार्ग स्पष्ट हो जाए और तेरे इन्कार के कारण उन पर हुज्जत पूरी हो जाए। उन लोगों को कह दे कि मैं ख़ुदा तआला की ओर से मामूर (आदेशित) होकर आया हूं और मैं वह हूं जो सबसे पहले ईमान लाया।

सज्जनो! इस्लाम के द्वारा अल्लाह तआला ने जिस महान मिशन पर आपको आदेशित किया वह कोई मामूली मिशन नहीं था बल्कि समस्त संसार में समस्त धर्मों पर इस्लाम को विजयी करने का मिशन आपके सुपुर्द किया गया था और उस समय आपकी बेबसी और गरीबी का क्या हाल था, वह आपके ही अपने शब्दों में आपको सुनाता हूं आप फरमाते हैं:- जब मैंने अपने आप को देखा तो अत्यंत गुमनाम और तमाम लोगों में से अकेला पाया। कारण यह कि न तो मैं कोई ख़ानदानी पीरज़ादा और किसी गद्दी से संबंध रखता था ताकि मुझ पर उन लोगों की आस्था हो जाती और वह मेरे इर्द गिर्द जमा हो जाते, जो मेरे बाप दादा के मुरीद थे और काम आसान हो जाता और न मैं किसी प्रसिद्ध विद्वान फाज़िल के वंश में से था, ताकि सैकड़ों बापदादा के शिष्यों का मेरे साथ संबंध होता और न मैं किसी प्रसिद्ध विद्वान से संस्थागत रूप से शिक्षा प्राप्त और डिग्री प्राप्त था कि मुझे अपने शैक्षिक दृष्टिकोण से शिक्षा पर ही भरोसा होता और न मैं किसी जगह का बादशाह या नवाब या हातिम था ताकि मेरे हुकूमत के रौब से हज़ारों लोग मेरे अधीन हो जाते। बल्कि मैं एक गरीब एक वीरान गांव का रहने वाला और बिल्कुल उन विशिष्ट लोगों से अलग था जो संसार में प्रसिद्ध हो सकते हैं या होते हैं। अत: मुझे अल्लाह की इस वह्यी के बाद जितनी चिंता हुई वह एक स्वाभाविक बात थी और मैं इस बात का मोहताज था कि मेरे जीवन को स्थापित रखने के लिए अल्लाह तआला महान वादों से मुझे सांत्वना देता।"

(बराहीन-ए-अहमदिया भाग पंचम, पृष्ठ 52 से 54 तक)

अत: ऐसे समय में अल्लाह तआला ने आपको अत्यंत प्रेम भरे शब्दों में तसल्ली और ख़ुशख़बरी देते हुए फरमाया-

لَا تَيْـَٔسْ مِنْ رَّوْحِ اللّٰهِ اَلَا اِنَّ نَصْرَ اللّٰهِ قَرِيْبٌ۔ يَاْتِيْكَ مِنْ كُلِّ فَجٍّ عَمِيْقٍ۔ يَاْتُوْنَ مِنْ كُلِّ فَجٍّ عَمِيْقٍ۔ يَنْصُرُكَ اللّٰهُ مِنْ عِنْدِهٖ۔ يَنْصُرُكَ رِجَالٌ نُّوْحِيْ اِلَيْهِمْ مِّنَ السَّمَآءِ۔ وَلَا تُصَعِّرْ لِخَلْقِ اللّٰهِ وَلَا تَسْئَمْ مِّنَ النَّاسِ۔ اَصْحَابُ الصُّفَّةِ وَمَا اَدْرٰكَ مَا اَصْحَابُ الصُّفَّةِ تَرٰى اَعْيُنَهُمْ تَفِيْضُ مِنَ الدَّمْعِ۔ يُصَلُّوْنَ عَلَيْكَ

(बराहीन अहमदिया भाग 3 पृष्ठ 238 से 242)

अर्थात ख़बरदार हो कि अल्लाह की सहायता तुझसे निकट है। वह सहायता प्रत्येक दूर के मार्ग से तुझे पहुंचेगी और ऐसे मार्गों से पहुंचेगी कि वह मार्ग लोगों के बहुत चलने से जो तेरी तरफ आएंगे, गहरे हो जाएंगे और इतनी अधिकता से लोग तेरी ओर आएंगे कि जिन मार्गों पर वे चलेंगे उन में गड्ढे पड़ जाएंगे। तेरी सहायता वे लोग करेंगे जिनके दिलों में हम अपनी ओर से इल्हाम करेंगे। और याद रख कि वह ज़माना आने वाला है कि लोग अधिकता से तेरी ओर आएंगे। तुझ पर अनिवार्य है कि तू उनसे अव्यवहार न करे, और तुझ पर अनिवार्य है कि उनकी अधिकता को देख कर थक न जाए और ऐसे लोग भी होंगे जो अपने देशों से प्रवास करके तेरे घरों में आकर आबाद होंगे। वही हैं जो ख़ुदा के निकट असहाब सुफ़्फ़ा कहलाते हैं और तू क्या जानता है कि वे किस शान के लोग होंगे जो असहाब सुफ़्फ़ा के नाम से नामित होंगे। वह बहुत मजबूत ईमान वाले होंगे तू देखेगा कि उनकी आंखों से आंसू बहते होंगे वे तेरे ऊपर दरूद भेजेंगे।

आदरणीय पाठकगण! यह समस्त भविष्यवाणियां सैयदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के जीवन में ही अत्यंत शानो-शौकत के साथ पूरी हुई और आज दुनिया इस बात की गवाह है कि इस छोटी सी गुमनाम बस्ती से एक अत्यंत गुमनाम व्यक्ति को जब अल्लाह तआला ने संसार के सुधार के लिए अवतरित फरमाया तो उसके साथ ही बड़ी प्रचुरता के साथ सृष्टि ने ख़ुदा के मसीह के आने की सूचना पाकर क़ादियान का रुख किया और बड़ी दूर से सफर कर के लोग क़ादियान पहुंचे। कुछ ने हमेशा के लिए क़ादियान को अपना निवास स्थान बना लिया और कुछ आपके दीदार से लाभान्वित होकर यह कुछ दिन आपकी सेवा में व्यतीत करके अपने देशों को लौट जाते और अभी इस भविष्यवाणी को 25 साल ही गुज़रे थे कि उसके पूरा होने के बारे में आप खुद फरमाते हैं कि बाद इसके ख़ुदा तआला ने इस भविष्यवाणी के पूरा करने के लिए अपने भक्तों को मेरी तरफ भेज दिया और बड़ी बड़ी फौज की सूरत में लोग क़ादियान में आए और आ रहे हैं और नकदी और सामान और हर एक प्रकार के तोहफे इस अधिकता से लोगों ने दिए और दे रहे हैं जिनकी कोई गिनती नहीं कर सकता। फरमाया मौलवियों की तरफ से बहुत सी रोक लगाई गईं और उन्होंने नाखूनों तक ज़ोर लगाया कि लोग इस तरफ न आएं लेकिन वह अपनी समस्त कोशिशों में नाकाम रहे और अंतत: यह हुआ कि मेरी जमाअत पंजाब के समस्त शहरों और देहात में फैल गई और भारत में भी जगह जगह पर इस के पौधे लग गए बल्कि यूरोप और अमेरिका के कुछ अंग्रेज़ भी इस्लाम स्वीकार करके इस जमाअत में दाखिल हुए और इस क़ादियान में इतनी अधिकता से लोग आए कि तांगों की अधिकता के कारण कई जगह से क़ादियान की सड़कें टूट गईं।

हुज़ूर फरमाते हैं कि इस भविष्यवाणी को अच्छी तरह सोचना चाहिए और खूब विचारपूर्वक सोचना चाहिए कि कौन जानता था और किसके ज्ञान में यह बात थी कि जब मैं एक छोटे से बीज के समान बोया गया और बारिश के हज़ारों पैरों के नीचे कुचला गया और आंधियां चलीं और तूफान आए और एक बाढ़ के समान बगावत का शोर मेरे छोटे से पौधे पर फिर गया। फिर भी मैं इन सदमों से बच जाऊंगा। अत: वह बीज ख़ुदा के फ़ज़ल से व्यर्थ न गया बल्कि बढ़ा और फूला और आज वह एक बड़ा वृक्ष है जिसकी छाया के नीचे 300000 मनुष्य विश्राम कर रहे हैं। यह ख़ुदाई काम हैं जिन तक पहुंचने की मनुष्य में सामर्थ्य नहीं। (हकीकतुल वह्यी पृष्ठ-249)

आदरणीय पाठकगण! यह तो सन 1907 की बात है जबकि

आज तो सारा साल ही बड़ी अधिकता के साथ पवित्र मसीह के मेहमान क़ादियान आते हैं विशेषता जलसा सालाना के अवसर पर दुनिया भर के देशों से हज़ारों की संख्या में अहमदियत की शमा के परवाने मसीह की इस पवित्र बस्ती में खिंचे चले आते हैं।

आर्थिक सहायता

सज्जनो! फिर इन भविष्यवाणियों में अल्लाह तआला ने फरमाया था कि ख़ुदा अपनी ओर से तेरी सहायता करेगा और वे लोग तेरी सहायता करेंगे जिनको हम आसमान से इलहाम करेंगे। आदरणीय पाठकगण! एक समय वह भी था कि आप की भावज साहिबा अपने दस्तरख्वान का बचा हुआ खाना आपके लिए भिजवा दिया करती थीं लेकिन ख़ुदाई ख़ुशख़बरियों के अनुसार आज हज़ारों ख़ानदान आपके दस्तरख्वान पर पल रहे हैं, इस नेमत का वर्णन करते हुए आप अपने एक अरबी शेर में फरमाते हैं कि:-

لُفَاظَاتُ الْمَوَائِدِ كَانَ اُكْلِی
فَصِرْتُ الْيَوْمَ مِطْعَامَ الْاَهَالِی

कि एक समय था कि दूसरों के दस्तरख्वान के बचे हुए टुकड़े मेरी ख़ुराक हुआ करते थे लेकिन आज यह हालत है कि बहुत से ख़ानदान मेरे दस्तरख्वान पर खाना खा रहे हैं। फिर एक वह समय भी था कि जलसा सालाना के मेहमानों को खाना खिलाने के लिए आपके पास पैसे नहीं थे तो हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने अपने ससुर मोहतरम हज़रत मीर नासिर नवाब साहब रज़ि अल्लाहु अन्हु को फरमाया के मेरी बीवी साहिबा का कोई गहना (ज़ेबर) बेचकर मेहमानों के खाने का प्रबंध कर लिया जाए। लेकिन अल्लाह तआला की दी हुई ख़ुशख़बरियों के अनुसार आज एक-एक जलसा सालाना पर करोड़ों रुपए खर्च होते हैं। जबकि आज तो दुनिया के बहुत से देशों में क़ादियान के समान सालाना जलसों का भव्य आयोजन होता है और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के जारी किए हुए लंगर की शाखाएं आज दुनिया के कई देशों में जारी हैं इसी प्रकार वह जमाना भी था कि बराहीन अहमदिया के प्रकाशन के लिए आप स्वयं अमृतसर जाते थे और उसके प्रकाशन के खर्चे के लिए बहुत चिंतित रहते थे या फिर आज अल्लाह तआला की आर्थिक सहायता का यह हाल है कि आपके मिशन के पूरा करने के लिए जमाअत अहमदिया वार्षिक करोड़ों नहीं बल्कि अरबों रुपए खर्च कर रही है। आज दुनिया हैरान और दांतो तले उंगली दबा रही है कि एक छोटी सी गरीब जमाअत के पास इतना रुपया कहां से आता है। दुनियादारी की सोच रखने वालों को जब कुछ समझ नहीं आता तो वे कह देते हैं कि उनको इस्राइल से पैसा आता है या अमुक देश उनकी सहायता करता है। एक ऐसे ही अवसर पर हज़रत खलीफ़तुल मसीह सालिस रह ने फरमाया था-

"हमारी दौलत अमेरिका या कैनेडियन डॉलर नहीं या यूरोपियन करेंसी या ब्रिटिश पाउंड नहीं, हमारे दौलत तो केवल वह दिल है जो एक प्रकाशमान सीने के अंदर धड़क रहा है। जब तक यह दिल हमारे हैं और जब तक इन तीनों की संख्या बढ़ती जा रही है पैसे की किसे परवाह है, वह तो आवश्यकता पड़ने पर अल्लाह तआला आसमान से फेंकेगा। (ख़ुत्बा जुमा 21 नवंबर 1975)

आदरणीय पाठकगण अब मैं एक ऐसी भविष्यवाणी का वर्णन करूंगा जिसका प्रकटन हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के समय से लेकर आज तक बड़ी शान और शौकत के साथ हो रहा है हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को अल्लाह तआला ने ख़ुशख़बरी देते हुए फरमाया था कि-

"मैं तेरी तबलीग़ (प्रचार) को धरती के किनारों तक पहुंचाऊंगा"

(तज़्किरा पृष्ठ 207 इल्हाम 1898 ई)

यह सन 1898 ई का इल्हाम है उस समय आपके मानने वालों की संख्या कुछ हज़ार थी। इस पृष्ठभूमि में यह एक महान भविष्यवाणी बन जाती है क्योंकि आज ख़ुदा तआला के फज़्ल से जमाअत अहमदिया संसार के 210 देशों में फैल चुकी है और जमाअत अहमदिया की संख्या हज़ारों से निकलकर लाखों में नहीं बल्कि करोड़ों में पहुंच चुकी है।

आदरणीय पाठको! अल्लाह तआला ने अपने वादे के अनुसार कि "मैं तेरी तबलीग़ को धरती के किनारों तक पहुंचाऊंगा" जमाअत को तबलीग़ के बहुत से माध्यम प्रदान किए। उदाहरण के रूप में आज खिलाफत अहमदिया की छत्रछाया मे अहमदियत अर्थात वास्तविक इस्लाम की तबलीग़ को दुनिया के किनारों तक पहुंचाने के लिए दुनिया भर में हज़ारों तब्लीग़ी सेंटरों की स्थापना हो चुकी है, हज़ारों जीवन दान करके मुबल्लिग और मुअल्लिम तब्लीग़ और प्रचार के काम में दिन-रात व्यस्त हैं। दुनिया के कई देशों में विभिन्न भाषाओं में लिटरेचर के प्रकाशन के लिए आधुनिक प्रिंटिंग प्रेस स्थापित की गई हैं, अब तक 75 भाषाओं में क़ुरआन करीम के अनुवाद प्रकाशित हो चुके हैं और सबसे बढ़कर मुस्लिम टेलीविजन अहमदिया इंटरनेशनल की स्थापना है, जिसके 3 चैनल समस्त संसार में 24 घंटे यह ऐलान कर रहे हैं कि-

اسمعواصوت السماء جاء
المسیح جاء المسیح
نیز بشنو از زمیں آمد امام کامگار

आदरणीय पाठकगण! आज इसी MTA की बरकत से अहमदियों पर हर जुमा एक नई शान और बरकतों के साथ उदय होता है जबकि दुनिया के 210 देशों के करोड़ों अहमदी मस्जिदों में, नमाज़ सेंटरों और अपने-अपने घरों में टीवी के सामने बैठकर दरूद शरीफ पढ़ते हुए अपने प्यारे आका हज़रत अमीरुल मोमिनीन अय्यदहुल्लाह तआला बिनश्रिहिल अज़ीज़ के ख़ुत्बे का बेसब्री से प्रतीक्षा कर रहे होते हैं। भला कोई बताए तो सही कि क्या कोई और भी है जिसका ख़ुत्बा इस शान के साथ दुनिया सुनती है या जिस का पैगाम दुनिया के कोने-कोने में पहुंच रहा है।

यद्यपि हज़रत मसीह दाऊद अलैहिस्सलाम के जीवन में ही आपकी तब्लीग़ हिंदुस्तान से निकलकर बाहर के विभिन्न देशों में पहुंच चुकी थी लेकिन आज पांचवीं ख़िलाफ़त के दौर में अल्लाह तआला के फ़ज़्ल और इनामों की वह मूसलाधार बारिश हो रही है कि जिसकी गणना असंभव है। हज़रत ख़लीफतुल मसीह खामिस के नेतृत्व में जमाअत अल्लाह के फज़्ल से हर लिहाज से उन्नति की नई से नई मंजिलें तय कर रही है।

इस्लाम की शांतिप्रिय शिक्षाओं पर आधारित हुज़ूर अनवर के ब्रिटिश, डच और यूरोपियन पार्लिमेंटों में इसी तरह जर्मनी के मिलिट्री हेडक्वार्टर्स और कैपिटल हिल अमेरिका में बीसियों पीस सिंपोज़ियम और कॉन्फ्रेंस में आपके भाषणों से पूरी दुनिया में करोड़ों लोगों तक अहमियत का संदेश पहुंच चुका है और इस्लाम की शांतिप्रिय शिक्षा पर आधारित आपके इन भाषणों ने यूरोप और अमेरिका के बुद्धिजीवियों और सामान्य और विशेष स्तर को इस्लाम के प्रति अपना दृष्टिकोण बदलने पर विवश कर दिया है।

आदरणीय पाठकगण! आज दुनियादार अज्ञानी और दुश्मन मौलवी आगबबूला है कि जमाअत को यूरोप का समर्थन प्राप्त हो गया है। काश दुनियादार मौलवी दुनियादारी की ऐनक उतार कर विचार करते तो उन्हें ज्ञात हो जाता है कि यूरोप की नहीं बल्कि जमाअत अहमदिया को ख़ुदा तआला का समर्थन प्राप्त हो चुका है। वास्तव में इनकी कमरें टूट चुकी हैं और इनकी हिम्मत जवाब दे गई है हर ओर "कुल्लुहुम फिन्नार" (अर्थात वे सब के सब आग में हैं) का दृश्य है, द्वेष की आग में जल रहे हैं, इनके भाग्य में केवल जलना है और जलकर भस्म हो जाना है।

सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अल्लाह के वादे की रोशनी में बड़े दावे से फरमाते हैं- "हे समस्त लोगों सुन रखो कि यह उसकी भविष्यवाणी है जिसने ज़मीन और आसमान बनाया वह अपनी इस जमाअत को समस्त देशों में फैला देगा और हुज्जत और दलील की दृष्टिकोण से सब पर उनको विजयी करेगा। वे दिन आते हैं बल्कि निकट हैं कि दुनिया में केवल यही एक धर्म होगा जो सम्मान के साथ याद किया जाएगा। ख़ुदा इस मजहब और इस सिलसिला में बहुत बरकत डालेगा और हर एक को जो इसको नष्ट करने की इच्छा रखता है, असफल रखेगा और यह विजय हमेशा रहेगी यहां तक कि कयामत आ जाएगी।

(तज़किरतुश्शहादतैन, रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 20 पृष्ठ 66)

सचेत करने वाली भविष्यवाणियां

अहमदियत के विरोधियों का अंजाम

आदरणीय पाठको! अब मैं अपने भाषण के द्वितीय भाग को लेता हूं और समय के अभाव के कारण कुछ सचेत करने वाली भविष्यवाणियों का वर्णन करूंगा अल्लाह तआला क़ुरआन मजीद में फ़रमाता है

كَتَبَ اللّٰهُ لَاَغْلِبَنَّ اَنَا وَرُسُلِيْ

अल्लाह तआला ने यह लिख दिया है कि मैं और मेरे रसूल ही ग़ालिब आ कर रहेंगे (विजयी होंगे) और नबियों के दुश्मनों के बारे में फरमाया-

اِنَّا مِنَ الْمُجْرِمِيْنَ مُنْتَقِمُوْنَ कि मुजरिमों को हम सजा के बिना नहीं छोड़ते अपने इस अनादि कानून के अंतर्गत अल्लाह तआला ने सैयदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को जहां महान सफलताओं की अनंत खुशख़बरियां दीं वहां आपके दुश्मनों की तबाही, असफलता और नाकामी और अपमान एवं रुसवाइयों की भी ख़बर दी। अल्लाह तआला ने आपको इल्हाम करते हुए फरमाया- اِنِّيْ مُهِيْنٌ مَنْ اَرَادَ اِهَانَتَكَ (तज़्किरा-27) अर्थात जो तुझे अपमानित करने का इरादा करेगा मैं उस को अपमानित करूंगा। फिर फरमाया وَنُمَزِّقُ الْاَعْدَاءَ كُلَّ مُمَزَّقٍ (तज़्किरा-550) (मैं तेरे दुश्मनों को टुकड़े-टुकड़े कर दूंगा।) इसी प्रकार फरमाया-

يَعْصِمُكَ اللّٰهُ مِنَ الْعِدَا
وَيَسْطُوْ بِكُلِّ مَنْ سَطَا

(अर्थात अल्लाह दुश्मनों से तुझे बचाएगा और हर एक व्यक्ति जो तुझ पर हमला करता है अल्लाह उस पर हमला करेगा) फिर फरमाया- اِنَّ فِرْعَوْنَ وَهَامَانَ وَجُنُوْدَهُمَا كَانُوْا خَاطِئِيْنَ (अर्थात वे लोग जो फिरौन और हामान की का स्वभाव रखते हैं और उनके साथ के लोग जो उनका लश्कर हैं ये सब गलती पर हैं। फिर फरमाया- اِنِّيْ مَعَ الْاَفْوَاجِ اٰتِيْكَ بَغْتَةً मैं समस्त फौजों के साथ अर्थात फरिश्तों के साथ निशानों के दिखलाने के लिए तेरे पास आऊंगा। (तज़्किरा पृष्ठ 494)

आदरणीय पाठको! इन इलाकों में अल्लाह तआला ने हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम को एक लंबे समय पूर्व यह सूचना दे दी थी कि आपका विरोध होगा और आप की जमाअत का भी विरोध होगा। विरोधी आपके मिशन को तबाह करने के लिए एड़ी चोटी का जोर लगाएंगे। आपको बताया गया कि इस विरोध के कारण लोग भी सामने आएंगे और जमाअतें भी मुकाबले पर आएंगी और सरकारें भी टक्कर लेने का प्रयत्न करेंगे लेकिन ख़ुदा तआला जो परोक्ष का ज्ञाता है और सर्वशक्तिमान है उन्हें अपमानित करेगा और वह शीघ्र आपस में लड़ कर टुकड़े टुकड़े हो जाएंगे। इसलिए अहमदियत के इतिहास का एक एक दिन इस बात का गवाह है कि अल्लाह तआला ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से इन भविष्यवाणियों के अनुसार ही बर्ताव किया। निसंदेह शत्रुओं ने एड़ी चोटी का जोर लगाया। हर प्रकार चालबाज़ियों से काम लिया लेकिन अल्लाह तआला ने उनकि चालबाज़ियों को हर प्रकार से उन्हीं पर उल्टा दिया और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और आप की जमाअत को हर मैदान में सफल किया। अत: देख लीजिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सबसे बड़े शत्रु और सबसे बड़े इन्कार करने वाले मौलवी मुहम्मद हुसैन बटालवी का क्या परिणाम हुआ जिसने कहा था कि मैंने ही इस व्यक्ति को उठाया है और अब मैं ही इसे गिराऊंगा। लेकिन आज सारी दुनिया गवाह है कि अल्लाह तआला ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और आप की जमाअत को पूरी दुनिया में कैसे महानता और बुलंदी प्रदान की है और मौलवी मुहम्मद हुसैन बटालवी को किस प्रकार अपमानित किया। आज पूरे बटाला में किसी से जाकर मौलवी मुहम्मद हुसैन बटालवी के बारे में पूछ लो कोई उसका नाम भी नहीं जानता, कोई नहीं बता पाएगा कि उसका घर कहां था और वह कहां दफन हुआ लेकिन सैयदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का पैगाम आज सारी दुनिया में डंके की चोट पर गूंज रहा है और सारी दुनिया में आप पर जान कुर्बान करने वाले करोड़ों मौजूद हैं। इसी प्रकार मौलवी सनाउल्लाह अमृतसरी जो अपने आप को क़ादियान का विजेता कहा करता था, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की मुबाहिला की दावत से भागते हुए निरंतर लिखता था कि यह कोई सच्चाई की कसौटी नहीं है कि सच्चे के जीवन में

झूठा मरे बल्कि मसीलमा कज्ज़ाब का उदाहरण देकर कहता था कि क़ुरआन करीम से सिद्ध है कि झूठे को लंबी मोहलत दी जाती है। अत: उसी की दलील के अनुसार उसको लंबी आयु दी गई और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के देहांत पर उसने बड़ी हसरत से कहा था कि काश अब मिर्जा साहब की समस्त पुस्तकों को जमा करके जला दिया जाए ताकि आइंदा उनका कोई नाम लेने वाला भी न बचे। उसका स्वयं अपना परिणाम यह हुआ के 1947 के दंगों में उसी की उपस्थिति में उसके इकलौते बेटे को बुरी तरह मार दिया गया और उसके अपने पुस्तकालय को जो उसे अपनी जान से भी अधिक प्रिय था उसकी आंखों के सामने जलाकर राख कर दिया गया और असफलता और नाकामी के साथ बड़ी हसरत से दुनिया से विदा हुआ और अहमियत का बाल भी बांका न कर सका।

आदरणीय पाठको! इस अवसर पर मैं संक्षेप से काम लेते हुए कुछ ऐसे दुश्मनों के केवल नामों का वर्णन करना चाहता हूं जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की तबाही के इच्छुक थे। कुछ ने आपके विरुद्ध बद्दुआएं कीं और कुछ मुबाहिला के परिणामस्वरुप तबाह हुए उदाहरणतया मौलवी नज़ीर हुसैन देहलवी, मौलवी गुलाम दस्तगीर कचौरी, मौलवी रशीद अहमद गंगोही, शाह दीन लुधियानवी, अमेरिका का जान एलेग्ज़न्डर डोई, मौलवी अब्दुल मजीद देहलवी, सादुल्ला लुधियानवी, लुधियाना के ही मौलवी मुहम्मद, मौलवी अब्दुल अज़ीज़ और मौलवी अब्दुल्ला। यह सभी मुबाहिला के परिणाम स्वरुप भयानक मौत का शिकार हुए। इसी प्रकार मोहिउद्दीन लखूखे वाले, नूर मुहम्मद भिड़ीचढ़, चिराग दीन जमूनी, मौलवी गुलाम रसूल अमृतसरी, इस्माइल अलीगढ़ी, मौलवी मुहम्मद हुसैन भीं वाले इन समस्त ने हुज़ूर अलैहिस्सलाम के विरुद्ध बद्दुआएं ककीं और अधिकतर प्लेग के अज़ाब से तबाह हुए। (विस्तार के लिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की पुस्तक हकीकतुल वह्यी का अध्ययन करें)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम, अल्लाह तआला के वादों के पूरा होने पर धन्यवाद करते हुए फरमाते हैं-

गढ़े में तूने सब दुश्मन उतारे
हमारे कर दिए ऊंचे मीनारे
मुक़ाबिल पर मेरे यह लोग हारे
कहां मरते थे पर तूने ही मारे
शरीरों पर पड़े उनके शरारे
न उनसे रुक सके मकसद हमारे
उन्हें मातम हमारे घर में शादी
फ़ सुभहानल्लज़ी अख्ज़ल अआदि

आदरणीय पाठको! यह वे शत्रु थे जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के जीवन में अल्लाह तआला के वादों के अनुसार अपमान और रुसवाई के गड्डे में गिराए गए जबकि आप के बाद भी बहुत से फितने उठे उदाहरणस्वरूप सन 1934 में मज्लिस-ए-अहरार उठी और अहरार के संस्थापक सैयद अताउल्लाह शाह बुखारी जिसने अहमदियों को मसीह की भेड़ें कहते हुए बड़े तिरस्कार से कहा था कि अहमदियत को मिटाने के लिए बहुत से हाथ उठे लेकिन ख़ुदा को यही मंजूर था कि मेरे हाथ से तबाह और बर्बाद हो और फिर ख़ुदा तआला की तकदीर के अनुसार मज्लिस-ए-अहरार और उसका संस्थापक का अत्यंत दर्दनाक परिणाम हुआ और दुनिया उसकी गवाह है। सन 1947 में पड़ोसी देश के प्रधानमंत्री जुल्फिक़ार अली भुट्टो जिसने गंदी उलेमा को प्रसन्न करने के लिए पाकिस्तान की क़ौमी असेंबली में अहमदियों को गैर मुस्लिम अल्पसंख्यक क़रार देकर यह समझ लिया था कि अब मेरी कुर्सी को कोई हिला न सकेगा लेकिन کلبٌ یموت علیٰ کلبٍ के पात्र उस व्यक्ति को दुनिया की कोई शक्ति हसरतनाक अल्लाह के अज़ाब से बचा न सकी।

एक फौजी डिक्टेटर जो अहमदियत को कैंसर के नाम से नामित करता था। उसने अहमदियों का जीना मुश्किल करने के लिए और सीधे तौर पर खिलाफत अहमदिया पर हाथ डालने के लिए एक अत्यंत अत्याचार पूर्ण आर्डिनेंस जारी किया लेकिन अल्लाह तआला ने चमत्कारिक रूप से हज़रत ख़लीफतुल मसीह राबेअ को बड़ी शान के साथ सुरक्षा पूर्वक लंदन प्रवास करने का सामर्थ्य प्रदान किया और दूसरी ओर समय का फिरऔन मोबाहिला के नतीजे में अपने पूरे लश्कर के साथ हैरान कर देने वाली हवाई घटना का शिकार होकर आसमान में ऐसा बिखरा कि उसके वजूद का कोई हिस्सा भी सुरक्षित नहीं पाया गया। सच तो यही है कि- "अंजाम यही होता आया फिरौनों का हामानों का।"

सैय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं यह इन लोगों की गलती है और अत्यंत दुर्भाग्य है कि मेरी तबाही चाहते हैं। मैं वह वृक्ष हूं जिसको वास्तविक मालिक (अर्थात अल्लाह तआला) ने अपने हाथ से लगाया है जो व्यक्ति मुझे काटना चाहता है उसका परिणाम सिवाय इसके कुछ नहीं कि वह कारून और यहूदा इस्कर्यूती और अबू जहल के भाग्य से कुछ हिस्सा लेना चाहता है। हेलोगो! तुम निसंदेह समझ लो कि मेरे साथ वह हाथ है जो आखिर समय तक मुझसे वफा करेगा। अगर तुम्हारे मर्द और तुम्हारी औरतें और तुम्हारे जवान और तुम्हारे बूढ़े और तुम्हारे छोटे और तुम्हारे बड़े सब मिलकर मेरे तबाह करने के लिए दुआएं करें, यहां तक के सजदे करते-करते नाक गल जाएं और हाथ घिस जाएं तब भी ख़ुदा हरगिज़ तुम्हारी दुआ नहीं सुनेगा और नहीं रुकेगा जब तक वह अपने काम को पूरा न कर ले। (रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 17, ज़मीमा तोहफा गोलड़विया पृष्ठ 49)

आदरणीय पाठकगण! अब मैं एक और महान भविष्यवाणी का वर्णन करना चाहता हूं। 1896 ई के अंत में प्लेग ने मुंबई और आसपास के देहात पर आक्रमण किया और हज़ारों जानें ले लीं। ऐसे समय में जब कि पंजाब में प्लेग का नामोनिशान तक नहीं था। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को अल्लाह तआला ने सूचना दी कि पंजाब में भी प्लेग फैलने वाली है। इस पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने 6 फरवरी 1898 को केवल मानव जाति की हमदर्दी की के लिए एक विज्ञापन प्रकाशित किया और ऐलान किया कि इस बारे में मुझे जो इल्हाम हुआ है उस से ज्ञात होता है कि यह अटल तकदीर है। अगर लोग अपने कर्मों का सुधार कर लें और (अल्लाह से) क्षमा मांग लें और दान दक्षिणा करें तो इस मुसीबत से बच सकते हैं आपने सचेत करते हुए फरमाया- "अत्यंत खतरे के दिन हैं और

मुसीबत द्वार पर है।"

(रूहानी ख़ज़ायन 14 अय्यामु मुस्सुलाह पृष्ठ 363)

आदरणीय पाठको! विरोधियों ने इस भविष्यवाणी पर खूब हंसी उड़ाई, गालियां दी और तरह-तरह के ऐतराज़ किए। परन्तु अंतत: प्लेग पंजाब में प्रवेश कर गई और ऐसी तबाही मचाई एक क़यामत बरपा हो गई। हज़ारों देहात वीरान और सैकड़ों शहर खाली हो गए और एक करोड़ बीस लाख जानें मौत का शिकार हुईं।

(तारीख़-ए-अहमियत जिल्द 2 पृष्ठ 6)

इस अवसर पर सैयदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फरमाया कि यह प्लेस इसलिए आई है कि ख़ुदा के मसीह का इंकार किया गया, उसको मारने के मंसूबे किए गए, उसका नाम काफिर और दज्जाल रखा गया। अत: यह प्लेग मेरी सच्चाई के लिए निशान के तौर पर है। आप ने फरमाया- ख़ुदा ने मुझे ख़बर दी है कि वह मेरी जमाअत के लोगों को प्लेग से सुरक्षित रखेगा। अत: उन्हें टीका कराने की आवश्यकता नहीं।

आदरणीय पाठको! इस महान भविष्यवाणी का एक दिलचस्प पहलू यह भी है कि आप अलैहिस्सलाम ने फरमाया कि ख़ुदा ने मुझे ख़बर दी है اِنَّہٗ اٰوَی الْقَرْیَۃَ कि वह इस बस्ती अर्थात क़ादियान को प्लेग की तबाही से सुरक्षित रखेगा। आपने अपने विरोधियों को दावत दी कि यह अत्यंत अच्छा अवसर है कि अपनी सच्चाई साबित करें और क़ादियान के मुक़ाबले पर किसी शहर का नाम लें कि वह प्लेग से सुरक्षित रहेगा। एक-एक विरोधी का नाम लेकर आपने उसे ग़ैरत दिलाई। उदाहरणस्वरूप आप ने फरमाया मियां शम्सुद्दीन और उनकी अंजुमन हिमायते इस्लाम के मेंबरों को चाहिए कि लाहौर की के बारे में भविष्यवाणी कर दें कि वह प्लेग से सुरक्षित रहेगा, अब्दुल जब्बार और अब्दुल हक शहर अमृतसर के बारे में भविष्यवाणी कर दें और क्योंकि फ़िर्का वहाबिया की असल जड़ दिल्ली है। इसलिए उचित है कि नज़ीर हुसैन और मुहम्मद हुसैन दिल्ली के बारे में भविष्यवाणी करें कि वह प्लेग से सुरक्षित रहेगा और अहमद हसन अमरोही को चाहिए कि वह अमरोहा के बारे में भविष्यवाणी करें कि अमरोहा प्लेग से सुरक्षित रहेगा।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं "मेरा यही निशान है कि प्रत्येक विरोधी चाहे वह अमरोहा में रहता है और चाहे अमृतसर में और चाहे दिल्ली में और चाहे कोलकाता में और चाहे लाहौर में और चाहे गोलड़ा में और चाहे बटाला में, अगर वह क़सम खाकर कहेगा कि उसका अमुक स्थान प्लेग से सुरक्षित रहेगा तो अवश्य वह स्थान प्लेग में गिरफ्तार हो जाएगा। क्योंकि उसने ख़ुदा के मुकाबले पर गलती की है।"

लेकिन हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की इस मुकाबले की दावत के लिए कोई विरोधी तैयार ना हुआ जबकि आपने बड़ी दिलेरी के साथ इस सच्चाई के निशान को प्रस्तुत करते हुए फरमाया-"यह प्लेग हमारी जमाअत को बढ़ाती जाती है और हमारे विरोधियों को तबाह करती जाती है हर एक महीना में कम से कम 500 आदमी और कभी हज़ार दो हज़ार आदमी प्लेग के द्वारा हमारी जमाअत में प्रवेश होते हैं।।।। अत: हमारे लिए प्लेग रहमत है और हमारे विरोधियों के लिए दंड और अज़ाब है और अगर इसके विरुद्ध सिद्ध हो तो मैं ख़ुदा तआला की क़सम खाकर कहता हूं ऐसे साबित करने वाले को मैं हज़ार रुपया नगद देने को तैयार हूं। कौन है जो ऐसे मुकाबले के लिए खड़ा हो और हम से हज़ार रुपया ले।

(रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 22 ततिम्मा हक़ीक़तुल वह्यी पृष्ठ 568)

सामाजिक और राजनैतिक परिवर्तन और इस्लाम की वैश्विक विजय की भविष्यवाणी

आदरणीय पाठको सचेत करने वाली भविष्यवाणियों के संबंध में अब अंत में मैं इस महान भविष्यवाणियों का एक लघु समीक्षा आपके समक्ष प्रस्तुत करना चाहता हूं जो दुनिया के सामाजिक और राजनीतिक परिवर्तनों से संबंध रखती है और जिनके परिणाम स्वरुप दुनिया का नक्शा ही बदल गया। अत: इस समय तक दुनिया दो विश्व युद्धों से दो चार हो चुकी है। दोनों विश्व युद्धों के बारे में जमाअत अहमदिया के संस्थापक ने कई वर्ष पूर्व भविष्यवाणी की थी। अत: 1940 ई में पश्चिमी शक्तियों के मुकाबले किसी पूर्वी शक्ति की कल्पना भी नहीं की जा सकती थी। अल्लाह तआला ने आप को इल्हाम किया कि

"एक पूर्वी शक्ति और कोरिया की नाज़ुक हालत"।

अत: 1914 में जब प्रथम विश्व युद्ध हुआ तो भविष्यवाणी के अनुसार संसार ने देखा कि जापान एक पूर्वी शक्ति की हैसियत से पश्चिमी शक्तियों के मुकाबले पर उभरा और कोरिया जापान के अधीन आ गया जबकि पहले वह रूस के कब्जे में था और इसी प्रकार आप की भविष्यवाणी के अनुसार दुनिया का सबसे बड़ा और सबसे अधिक समर्थ बादशाह ज़ार-ए-रूस अचानक अपने शाही ख़ानदान समेत अत्यंत अपमान के साथ सरकार से बेदखल कर दिया गया और उसको उसके शाही ख़ानदान समेत विभिन्न स्थानों पर कैदी बनाकर ऐसी यातनाएं दी गईं जिनको सुनकर आज भी शरीर कांप जाता है। और अंतत: ज़ार और उसके ख़ानदान को अपमान के साथ मार दिया गया और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का बयान पूर्णत: पूरा हुआ कि-

"ज़ार भी होगा तो होगा उस घड़ी बाहाले ज़ार"

फिर दूसरे विश्व युद्ध में आप की भविष्यवाणी के अनुसार ऐसी वैश्विक तबाही आई जो पहले विश्व युद्ध की तबाही से अधिक, व्यापक थी और भयानक थी। इस युद्ध में जापान की पराजय हुई और जापान के शहर हिरोशिमा और नागासाकी पर एटमी हमला करके उनके अस्तित्व को दुनिया के नक्शे से लगभग मिटा दिया गया। इधर जापान को पराजय हुई तो चीन एक पूर्वी शक्ति की हैसियत से दुनिया में उभर कर आया। यह समस्त परिवर्तन वास्तव में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की भविष्यवाणियों के अनुसार प्रकट हुए हैं। आज दुनिया 2 ब्लॉकों में बट चुकी है। एक तरफ अमेरिका और उसके साथी हैं और दूसरी ओर रूस और उसके साथी हैं। इन दोनों विरोधी गिरोहों की तबाही भी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की भविष्यवाणियों के अनुसार तीसरे विश्वयुद्ध के रूप में सर पर मंडला

शेष पृष्ठ 26 पर

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का दूसरा वतन 'सियालकोट'

मुजीबुर रहमान मुबल्लिग़ सिलसिला सियालकोट

अनुवादक: फरहत अहमद आचार्य

सियालकोट का संक्षिप्त परिचय

सियालकोट पाकिस्तान के पंजाब नामक राज्य का एक प्रसिद्ध ऐतिहासिक और कारीगरी वाला शहर है हिंदुओं की पवित्र किताब महाभारत के लेखक श्री वेदव्यास जी के अनुसार इस शहर का इतिहास 5000 साल पुराना है। सियालकोट की ऐतिहासिक विशेषता के बारे में कई श्लोक महाभारत में मौजूद हैं इसी प्रकार समस्त संसार में इस शहर को, खेलों का सामान और औजार तैयार करने के कारण विशेष स्थान प्राप्त है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और सियालकोट

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ख़ुदा तआला से पूर्ण प्रेम का संबंध रखने वालों के विषय में फरमाते हैं- उनके रहने के घरों में भी ख़ुदा तआला एक बरकत रख देता है वह मकान आपदाओं से सुरक्षित रहता है ख़ुदा के फरिश्ते उसकी सुरक्षा करते हैं इसी तरह उनके शहर या गांव में एक बरकत और विशेषता रख दी जाती है। इसी तरह उस मिट्टी को भी कुछ बरकत दी जाती है जिस पर उनका कदम पड़ता है।

(हकीक़तुल वह्यी, रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 22 पृष्ठ 19)

सियालकोट भी उन भाग्यशाली और बाबरकत स्थानों में से एक है जहां समय का इमाम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के बाबरकत कदम पड़े। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं- मुझे इस ज़मीन से ऐसी ही मोहब्बत है जैसा कि क़ादियान से, क्योंकि मैं अपने प्रथम ज़माने की उम्र में से एक हिस्सा इसमें व्यतीत कर चुका हूं और शहर की गलियों में बहुत चल फिर चुका हूं (लेक्चर सियालकोट रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 20 पृष्ठ 243)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम सबसे पहले 1864 ईसवी में रोजगार के उद्देश्य से सियालकोट तशरीफ़ लाए। आप अलैहिस्सलाम 1868 ईस्वी तक यहां रहते रहे। इसके बाद 1877 ईस्वी में भी तशरीफ़ लाए जबकि दावे के बाद आप 1892 और 1904 में यहां तशरीफ लाए।

रोज़गार का कारण और अल्लाह की हिकमत

हज़रत मुस्लेह मौऊद[रज़ि] फरमाते हैं-

"हज़रत मिर्ज़ा साहब की एक तहरीर मिली है जो आपने अपने पिता जी के नाम लिखी थी। आपके पिता आपको सांसारिक मामलों में होशियार करने के लिए मुकद्दमों आदि में व्यस्त रखना चाहते थे और आपकी जो तहरीर मिली है उसमें आपने अपने पिताजी को लिखा है कि दुनिया और उसकी दौलत सब समाप्त होने वाली चीजें हैं। मुझे इन कामों से दूर रखा जाए। मगर उन्होंने जब आपका पीछा ना छोड़ा तो आप सियालकोट चले गए, कि दिन को थोड़ा सा काम करके रात को आप बेफिक्री के साथ अल्लाह तआला को याद कर सकें।

दूसरी एक बात इसमें यह है कि क़ादियान सारा हमारी मिल्कियत है और अब भी जिन लोगों ने वहां जमीनें ली हैं वह सब अहमदी हैं इस दृष्टिकोण से भी मानो वहां के लोग हमारी रियाया हैं। इसीलिए वहां के लोगों की हज़रत मिर्ज़ा साहब अलैहिस्सलाम के विषय में गवाही पर कोई कह सकता था कि 'ख्वाजा का गवाह मेंढक'। इसलिए अल्लाह तआला ने आपको सियालकोट ला डाला, जहां आप अलैहिस्सलाम को गैरों में रहना पड़ा और इस तरह ख़ुदा तआला का मंशा यह था कि अपरिचित लोगों में से वह लोग जिन पर आप अलैहिस्सलाम या आपके खानदान का कोई प्रभावना हो, आपके पवित्र जीवन के गवाह खड़े हो जाएं। फिर सियालकोट पंजाब में ईसाईयों का केंद्र है वहां आपको उन से मुकाबला करने का भी अवसर मिल गया आप ईसाइयों से शास्त्रार्थ करते रहते थे और मुसलमानों ने आपके जीवन को देखा। क़ादियान के लोगों को आपके मज़ारेअ (खेती करने वाले) कहा जा सकता था परंतु सियालकोट के लोगों की यह हैसियत नहीं थी। वहां के समस्त बड़े-बड़े मुसलमान आपकी बुलंद शान से परिचित हैं। (अनवारुल उलूम जिल्द तेरा 13 पृष्ठ 408)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सियालकोट में रहने के कुछ वृतांत पाठकों की सेवा में प्रस्तुत हैं:-

अल्लाह की सुरक्षा

एक बार रात को मैं एक मकान की दूसरी मंज़िल में सोया हुआ था। उसी कमरे में मेरे साथ 15-16 और आदमी भी थे रात के समय शहतीर में टक-टक की आवाज़ आई मैंने सब आदमियों को जगाया कि शहतीर भयानक मालूम होता है, यहां से निकल जाना चाहिए उन्होंने कहा कोई चूहा होगा, कुछ डरने की बात नहीं और यह कहकर फिर सो गए। थोड़ी देर के बाद फिर वैसी ही आवाज़ आई। तब मैंने उनको दोबारा जगाया। मगर फिर भी उन्होंने कुछ परवाह न की। फिर तीसरी बार शहतीर से आवाज़ आई तब मैंने उनको सख्ती से उठाया और सब को मकान से बाहर निकाला और जब सब निकल गए तो स्वयं भी वहां से निकला अभी मैं दूसदूसरी सीढ़ी पर था कि वह छत नीचे गिरी और वह दूसरी छत को भी साथ लेकर नीचे जा पड़ी और चारपाइयां टुकड़े-टुकड़े हो गईं और हम सब बच गए। यह ख़ुदा तआला की चमत्कार रूपी सुरक्षा है जब तक हम वहां से निकल न आए शहतीर गिरने से सुरक्षित रहा। (मल्फूज़ात जिल्द 5 पृष्ठ 226)

एक और घटना का वर्णन करते हुए आप अलैहिस्सलाम फरमाते हैं एक बार का वर्णन है जबकि मैं सियालकोट में था तो एक दिन वर्षा हो रही थी, जिस कमरे के अंदर में बैठा हुआ था उसमें बिजली आई, सारा कमरा धुएं से भर गया और गंधक के समान दुर्गंध आती थी लेकिन हमें कुछ नुकसान न पहुंचा। उसी समय वह बिजली

एक मंदिर में गिरी जो कि तेजा सिंह का मंदिर था और उस में हिंदुओं की रस्म के अनुसार यात्रा के वास्ते गोल-गोल दीवार बनी हुई थी और वह अंदर बैठा हुआ था। बिजली उन तमाम चक्करों में से होकर अंदर जा कर उस पर गिर पड़ी और वह जलकर कोयले की तरह काला हो गया। देखो वही बिजली की आग थी जिसने उसको जला दिया मगर हमको कुछ नुकसान नहीं दे सकी क्योंकि अल्लाह तआला ने हमारी सुरक्षा की। (मल्फूज़ात जिल्द 5 पृष्ठ 225-226)

क़ुरआन करीम से मुहब्बत

आप अलैहिस्सलाम जब कचहरी से फारिग होकर घर पर आते तो दरवाजा बंद कर लेते। आप अलैहिस्सलाम के इस तरीके से कुछ जिज्ञासा करने वाले स्वभाव के लोगों को यह विचार होता कि यह पता लगाना चाहिए कि आप क्या करते हैं। एक दिन उन्होंने देखा कि आप मुसल्ला पर विराजमान हैं, कुरान मजीद हाथ में है और अत्यंत विनम्रता और दर्द भरी आवाज़ के साथ दुआ कर रहे हैं कि "या अल्लाह यह तेरा कलाम है मुझे तो तू ही समझाएगा तो मैं समझ सकता हूं। (तारीख़ अहमियत जिल्द 1 पृष्ठ 85)

दुआ की क़ुबूलियत

मियां बूटा कश्मीरी (जिनके घर में भी हुज़ूर अलैहिस्सलाम कुछ समय तक रहते रहे) कहते हैं कि- एक बार मेरे पिताजी बीमार हो गए। तमाम डॉक्टर और हकीम जवाब दे चुके कि अब यह नहीं बचेगा और इलाज करना व्यर्थ है। लेकिन हमने मिर्ज़ा साहब को बुलाया आप अलैहिस्सलाम ने दुआ की और कुछ इलाज भी बताया। अल्लाह तआला ने आपकी दुआ से मेरे पिताजी को ठीक कर दिया और बहुत सी उनकी दुआएं हमारे बारे में कुबूल हुई। (अल-फज़ल 8 अक्टूबर 1925)

समाज सेवा

सियालकोट में रहने के दौरान आपने मानवजाति की सेवा की ओर भी भरपूर ध्यान दिया। आप मानवजाति की इतनी सेवा करते थे कि जो तनख्वाह लाते उसमें मामूली सादा खाने का खर्च रखकर बाकी पैसों से मोहल्ले की विधवाओं को कपड़े बनवा देते या नगदी की सूरत में बांट देते थे। (सीरतुल महदी भाग तृतीय, पृष्ठ 94)

दौड़ का मुकाबला

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की धार्मिक श्रेष्ठता तो सबको ज्ञात थी परंतु आप शारीरिक रूप से भी स्वस्थ और इतने मज़बूत थे कि दौड़ में सबको पछाड़ देते थे। एक बार जब कचहरी समाप्त होने के बाद कर्मचारी घरों को जाने लगे तो यकायक तेज़ दौड़ने का चर्चा आरम्भ हुआ। प्रत्येक ने दावा किया कि मैं बहुत तेज़ दौड़ सकता हूँ। बल्ला सिंह नामक एक व्यक्ति ने कहा कि मैं सबसे आगे निकल सकता हूँ। मिर्ज़ा साहिब ने कहा कि मेरे साथ दौड़ लगाओ तो अभी सिद्ध हो जाएगा कि कौन बहुत दौड़ता है। अंततः शेख इलाहदाद साहिब निर्णायक निर्धारित हुए और यह तय पाया कि यहाँ से आरम्भ करके उस पुल टक कचहरी की सड़क और शहर की सीमा तक नंगे पांव दौड़े जूतियां एक आदमी ने उठा ली और पहले एक व्यक्ति उस पुल पर भेजा गया ताकि वह गवाही दे कि कौन आगे निकला और पहले पुल पर पहुंचा मिर्ज़ा साहब और बल्ला सिंह एक ही समय में दौड़े और अन्य सभी लोग सामान्य रफ्तार से पीछे रवाना हुए जब पुल पर पहुंचे तो मालूम हुआ कि मिर्ज़ा साहब आगे निकल गए और बल्ला सिंह पीछे रह गए।

(सीरतुल महदी भाग प्रथम द्वितीय प्रकाशन पृष्ठ 272)

ईसाईयत के फैलाव के लिए अंग्रेजों के प्रयत्न

19वीं शताब्दी इतिहास में ईसाई धर्म के फैलाव के दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण थी जिसमें ईसाईयत अंग्रेज़ सरकार की छत्रछाया में तेजी से फैल रही थी और ईसाई पादरी पूरे भारत को ईसाईयत की लपेट में लाने के दावे कर रहे थे। और अपने उद्देश्य को सफल बनाने के लिए बहुत से लिटरेचर की तैयारी कर रहे थे। पहले पहल सारे भारत को ईसाईयत के झंडे के नीचे लाने की पॉलिसी गुप्त रूप से अपनाई गई। मगर 1862 में इंग्लैंड के प्रधान-मंत्री लॉर्ड पामरस्टिन ने स्पष्ट कहा कि मैं समझता हूं कि हम सब अपने उद्देश्य में एक साथ हैं। यह हमारा कर्तव्य ही नहीं बल्कि खुद हमारा हित भी इस मामले से जुड़ा हुआ है कि हम ईसाईयत के प्रचार को जहां तक भी हो सके बढ़ाएं और भारत के कोने-कोने में इसको फैला दें।

(तारीख-ए-अहमियत जिल्द 1 पृष्ठ 89)

सियालकोट ईसाइयत का केंद्र

पंजाब को सलीब अर्थात ईसाई धर्म के झंडे के नीचे लाने के लिए ईसाइयों का केंद्रीय मिशन सर्वप्रथम लुधियाना में स्थापित किया गया। इसके बाद उनका दायरा दूसरे इलाकों तक भी फैल गया। लेकिन सियालकोट की विशेषता है कि यह वह स्थान है जिसने डटकर अंग्रेजों के विरुद्ध बगावत में हिस्सा लिया था। अतः अंग्रेजों ने उचित समझा कि इसी स्थान को केंद्र बनाया जाए। अतः उसको फौजी अफसरों के परामर्श के अनुसार 1856 में स्थापित किया गया। 10 साल के अंदर ही इस मिशन ने अपनी जड़ें मज़बूत कर लीं। और इस मिशन के अधीन ईसाईयत का बहुत प्रचार होने लगा।

कस्रे सलीब (सलीब का तोड़ना)

रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने भविष्यवाणी की थी कि मुस्लिम उम्मत मैं जो मसीह और महदी आएगा उसका एक बड़ा काम सलीब को तोड़ना होगा। सलीब को तोड़ने से अभिप्राय यह नहीं कि सलीबों को ज़ाहिर तौर पर तोड़ा जाएगा बल्कि यह अभिप्राय है कि ईसाइयत के झूठे विचारों का खण्डन किया जाएगा। अतः इस मामले के इज़हार के लिए पहला मैदान आप अलैहिस्सलाम के लिए सियालकोट सिद्ध हुआ जिसमें आप अलैहिस्सलाम ने बेहतरीन सफलता प्राप्त की जो आप अलैहिस्सलाम की सच्चाई का भी स्पष्ट सबूत है। उस समय जब अन्य उलेमा पादरियों का मुकाबला करने से डरते थे आप अलैहिस्सलाम ने उनका इस्लाम प्रतिरक्षा में ज़बरदस्त मुकाबला किया।

एक बार सियालकोट के इलाका हाजीपुरा के अलाइशा नामक पादरी से आप का शास्त्रार्थ हुआ। पादरी साहब ने शास्त्रार्थ का आरंभ करते हुए कहा कि ईसाईयत स्वीकार किए बिना मुक्ति संभव नहीं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने केवल इतना कहा

कि मुक्ति की सविस्तार परिभाषा बता दें। आप अलैहिस्सलाम का इतना कहना था कि वह पादरी सन्न रह गया और यह कहते हुए उठ खड़ा हुआ कि मैं इस प्रकार की मंतिक (तर्कशास्त्र) नहीं पढ़ा।

इसी प्रकार हुज़ूर अलैहिस्सलाम का सियालकोट में जिन पादरियों से विचारों का आदान-प्रदान रहता था उनमें से एक पादरी बटलर थे जो के स्कॉच मिशन के बड़े नामी-गिरामी और प्रसिद्ध पादरी थे।

पादरी बटलर आप की दलीलों से इतना प्रभावित हुए के दफ्तर के अंतिम समय में अक्सर आपकी सेवा में उपस्थित हो जाते थे और फिर बातें करते-करते आप के निवास स्थान तक पहुंच जाते और बड़े ध्यान से आपकी बातें सुनते, लेकिन कुछ संकीर्ण विचार पादरियों ने उन्हें इस से रोका और कहा कि इसमें आपका और मिशन का अपमान है इसलिए आप वहां न जाया करें। उन्होंने कहा कि यह एक महान व्यक्ति है। जिसके समान कोई नहीं। तुम उसको नहीं समझते मैं खूब समझता हूं। (अल हकम 7 अप्रैल 1934)

पादरी बटलर साहब जब विदेश जाने लगे तो उन्होंने उचित न समझा कि आप से मिले बगैर वहां चले जाएं। अत: वह दफ्तर के समय में कचहरी आए और डिप्टी कमिश्नर साहब के पूछने पर बताया कि मैं मिर्ज़ा साहब से मुलाकात के लिए आया हूं और फिर जहां आप अलैहिस्सलाम बैठे थे सीधे वहीं चले गए और कुछ देर बैठ कर वापस चले गए। (तारीख-ए-अहमियत जिल्द 1, पृष्ठ 93)

1877 ई में आगमन

इस साल आप अलैहिस्सलाम ने हकीम हसमुद्दीन साहब की दावत पर सियालकोट का सफर किया और अपने मुखलिस (निष्कपट) हिंदू दोस्त लाला भीमसेन के यहां ठहरे। (तारीख-ए-अहमियत जिल्द 1 पृष्ठ 148)

1892 में आगमन

जमाअत अहमदिया सियालकोट की इच्छा थी कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम एक बार फिर सियालकोट पधारें और उन्हें मिलने का सौभाग्य प्रदान करें। अत: जब आप लाहौर तशरीफ़ लाए तो मौलवी अब्दुल करीम साहब ने सियालकोट के लोगों की ओर से आपकी सेवा में सियालकोट आने का निवेदन किया आपने इस दावत को स्वीकार फरमाया और फरवरी 1892 ईसवी के दूसरे सप्ताह में सियालकोट तशरीफ़ लाए और हकीम हुस्सामुद्दीन साहब के मकान पर ठहरे।

(तारीख ए अहमदियत, जिल्द 1 पृष्ठ 459)

1904 ई में आगमन

दावे के बाद हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम 1892 ईस्वी और 1904 ईस्वी में सियालकोट तशरीफ़ लाए। 1904 ई के सफर में आप 27 अक्टूबर को क़ादियान से रवाना हुए। आप आपकी इच्छा थी कि ऐसी गाड़ी पर सफर किया जाए जो रात को वहां पहुंचे। मगर सियालकोट के लोगों की इच्छा थी के दिन के समय हुज़ूर यहां पहुंचे ताकि अधिक से अधिक लोग आपका स्वागत कर सकें, लेकिन हुजूर ने इस प्रस्ताव को पसंद न किया। अगर कोई दुनियादार व्यक्ति होता तो निसंदेह दोपहर को आना पसंद करता ताकि उसकी महानता का लोगों को ज्ञान हो सके परंतु आपको इन सांसारिक मामलों से कोई मतलब ना था।

स्वागत और मेहमान नवाज़ी

विरोधियों ने लोगों को आप का स्वागत करने से रोकने के लिए भरपूर यत्न किए परंतु अत्यंत विरोध के बावजूद आप के स्वागत के लिए बहुत संख्या में लोग मौजूद थे और स्टेशन पर बहुत भीड़ थी। हुज़ूर अलैहिस्सलाम के निवास के लिए हकीम हुस्सामुद्दीन साहब के मकान में प्रबंध किया गया। अन्य लोगों के लिए निकट के मकान खाली करवाए गए और सियालकोट के लोगों ने उनकी मेहमान नवाज़ी में कोई कसर नहीं छोड़ी।

बैत की तक़रीब

28 अक्टूबर को जुमा के दिन मस्जिद हकीम हुस्सामुद्दीन में मौलवी अब्दुल करीम साहब सियालकोटी ने जुमा पढ़ाया। जुमा के बाद बहुत से लोगों ने बैत की। बहुत अधिक भीड़ होने के कारण यह असंभव था कि सब लोग हज़रत साहिब के हाथ पर हाथ रख कर बैत कर सकें इसलिए 12 पगड़ियां विभिन्न दिशाओं में डाल दी गईं ताकि लोग बैत कर सकें। बैत के बाद आपने आकर्षक भाषण दिया और अपने दावे की सच्चाई पर प्रकाश डाला।

वापसी का इरादा और स्थगन

हुज़ूर अलैहिस्सलाम इस दिन काफी देर तक भीड़ में रहे जिसके कारण आपका स्वास्थ्य बिगड़ गया। 29 और 30 अक्टूबर को आप बाहर तशरीफ़ न ला सके। इस दौरान मेहमान और भी बढ़ गए इसलिए आपको ख्याल पैदा हुआ कि कहीं यह भीड़ सियालकोट की जमाअत के लिए कठिनाई का कारण न हो जाए। अत: हुज़ूर ने 31 अक्टूबर को वापस जाने का इरादा कर लिया। जब लोगों को ज्ञात हुआ तो बहुत परेशान हुए और आपसे निवेदन किया कि इस इरादे को त्याग दें। अत: आप ने इसे इरादे को त्याग दिया।

लेक्चर सियालकोट का लेखन

इन ठहरने के दिनों के लिए यह प्रस्ताव रखा गया कि आप अलैहिस्सलाम इस्लाम पर लेक्चर दें और 2 तारीख को यह लेक्चर पढ़कर सुनाया जाए। अत: अत्यंत बीमार होने के बावजूद आपने 31 अक्टूबर की दोपहर के बाद लेक्चर लिखा और 2 नवंबर को यह लेक्चर प्रकाशित भी हो गया। आपके लेक्चर में सम्मिलित होने से रोकने के लिए विरोधी उलेमा ने एड़ी चोटी का ज़ोर लगाया।

इस घटना के बारे में हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि अल्लाह अन्हु फरमाते हैं- हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम सियालकोट में गए तो मौलवियों ने फतवा दिया कि जो उनके लेक्चर में जाएगा उसका निकाह टूट जाएगा लेकिन क्योंकि हज़रत मिर्ज़ा साहब अलैहिस्सलाम का आकर्षण ऐसा था कि लोगों ने इस फतवा की भी कोई परवाह न की, तो रास्तों पर पहरे लगा दिए गए ताकि लोगों को जाने से रोकें और सड़कों पर पत्थर जमा कर लिए गए कि जो न रुकेगा उसे मारेंगे। फिर जलसे के स्थान से लोगों को पकड़कर ले जाते कि लेक्चर न सुन सकें। (अनवारुल उलूम जिल्द 7 पृष्ठ 192)

इन समस्त प्रयत्नों के बावजूद एक बहुत बड़ी भीड़ इस लेक्चर को सुनने के लिए उमड़ आई। 2 नवंबर सुबह 7:00 बजे लेक्चर का

समय निर्धारित हुआ। हज़रत खलीफतुल मसीह अव्वल रज़ि ने इस जलसे की अध्यक्षता की और मौलवी अब्दुल करीम साहब ने लेक्चर पढ़कर सुनाया। इस लेक्चर में आप अलैहिस्सलाम ने इस्लाम की विशेषताएं बहुत उत्तम रंग में वर्णन कीं। लेक्चर सुनकर एक यूरोपियन इंस्पेक्टर पुलिस जो इस समय ड्यूटी पर था, उसने कहा हमें तो आश्चर्य है कि तुम लोग इस व्यक्ति का विरोध क्यों करते हो, विरोध तो हमें या हिंदुओं को करना चाहिए, जिनके धर्म का वह खण्डन कर रहा है। इस्लाम को तो वह सच्चा और वास्तविक धर्म सिद्ध कर रहा है, खंडन तो हमारे धर्म का कर रहा है और तुम यूं ही विरोध कर रहे हो।

(अल्हकम 30 नवम्बर 1904)

कृष्ण होने का दावा

सियालकोट को यह विशेषता पर प्राप्त है कि आप अलैहिस्सलाम ने पहली बार कृष्ण होने का दावा इसी जगह से किया। आप अलैहिस्सलाम फरमाते हैं जैसा कि ख़ुदा ने मुझे मुसलमानों और ईसाइयों के लिए मसीह मौऊद करके भेजा है ऐसा ही में हिंदुओं के लिए बतौर अवतार के हूं और मैं 20 वर्ष से या कुछ अधिक वर्षों से इस बात को प्रसिद्ध कर रहा हूं कि मैं उन गुनाहों के दूर करने के लिए जिन से ज़मीन भर गई है, जैसा कि मसीह इब्न मरियम के रंग में हूं ऐसा ही राजा कृष्ण के रंग में भी हूं, जो हिंदू धर्म के तमाम अवतारों में से एक बड़ा अवतार था या यों कहना चाहिए कि आध्यात्मिक वास्तविकता के दृष्टिकोण से मैं वही हूं। यह मेरे विचार और अनुमान से नहीं है बल्कि वह ख़ुदा जो ज़मीन और आसमान का ख़ुदा है उसने मुझ पर प्रकट किया है और एक बार नहीं बल्कि कई बार मुझे बतलाया है कि तू हिंदुओं के लिए कृष्ण और मुसलमानों और ईसाइयों के लिए मसीह मौऊद है। मैं जानता हूं अज्ञानी मुसलमान इसको सुनकर यकायक यह कहेंगे कि एक काफिर का नाम अपने ऊपर लेकर कुफ्र को सच्चे तौर पर स्वीकार किया है। लेकिन यह ख़ुदा की वह्यी है जिसको प्रकट किए बिना मैं रह नहीं सकता और आज यह पहला दिन है कि ऐसी बड़ी सभा में मैं इस बात को प्रस्तुत करता हूं क्योंकि जो लोग ख़ुदा की तरफ से होते हैं वह किसी लानतान करने वाले की लानतान से नहीं डरते।

(लेक्चर सियालकोट रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 20 पृष्ठ 228)

दूसरों की गवाहियां

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के संयम और पवित्रता और महान आध्यात्मिक अस्तित्व होने के संबंध में कुछ विचार प्रस्तुत हैं:-

हकीम मज़हर हुसैन साहब अत्यंत घोर विरोधी होने के बावजूद यह कहने पर विवश हुए कि- अच्छी सूरत, बुलंद हौसला और बुलंद ख्यालात का व्यक्ति अपने बुलंद हिम्मत के मुकाबले किसी का वजूद नहीं समझता। (अलहकम 7 अप्रैल 1934)

मौलवी ज़फर अली साहब के पिता मुंशी सिराजुद्दीन साहिब कहते हैं कि- मिर्ज़ा अहमद साहब 1860 या 1861 के लगभग जिला सियालकोट में मोहर्रर थे। इस समय आपकी उम्र 22 या 23 साल की होगी हम आंखों देखी गवाही से कह सकते हैं कि जवानी में भी अत्यंत नेक और संयमी बुज़ुर्ग थे। कारोबार और नौकरी के बाद उनका तमाम समय धार्मिक अध्ययन में व्यतीत होता था, लोगों से कम मिलते थे।

(अखबार ज़मींदार मई 1908 ई बहवाला बदर 25 जून 1908)

मौलाना सय्यद मीर हसन साहब सियालकोटी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सियालकोट में रहने के समय को याद करते हुए लिखते हैं कि-

"एक सरसरी नज़र से भी देखने वाले पर स्पष्ट हो जाता था कि हज़रत अलैहिस्सलाम अपनी कथनी और करनी में दूसरों से विशेष थे।

(सीरतुल महदी भाग प्रथम, पृष्ठ 270)

हज़रत शेख याकूब अली इरफानी साहब, सियालकोट में मीर हसन साहब सियालकोटी से जब मिले तो उन्होंने कहा- अफसोस हमने उनकी क़दर न की। उनके आध्यात्मिक कमालात (विशेषताओं) को मैं बयान नहीं कर सकता। उनका जीवन मामूली व्यक्ति के जीवन के समान न था बल्कि वे उन लोगों में से थे जो ख़ुदा तआला के विशेष बंदे होते हैं और दुनिया में कभी-कभी आते हैं।

(अलहकम 7 अप्रैल 1934)

बाबरकत मक़ामात (स्थान)

मस्जिद हकीम हुस्सामुद्दीन: इस मस्जिद में आप अलैहिस्सलाम नौकरी के दौरान और दावे से पहले रहा करते थे। मकान अब्दुल अज़ीज़ साहब इस मकान में आप नौकरी के दौरान रहा करते थे। **मकान हकीम हसमुद्दीन साहब:** इस मकान में आप अलैहिस्सलाम ने 1892 और 1904 में निवास किया। **कचहरी:** इस जगह पर हुज़ूर अलैहिस्सलाम नौकरी करते थे। **सराय महाराजा:** इस जगह लेक्चर सियालकोट आप अलैहिस्सलाम की उपस्थिति में पढ़ा गया। **रेलवे स्टेशन:** 1904 में जब आप तशरीफ़ लाए तो ट्रेन इस स्टेशन पर आकर रुकी। विरोध के बावजूद स्वागत के लिए स्टेशन पर बहुत से लोग उपस्थित थे।

अल्लाह तआला से दुआ है कि वह हमारी जमाअत को हर रोज़ बेशुमार उन्नति प्रदान करे और हम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बाबरकत शिक्षाओं से लाभ उठाने वाले हों, आमीन।

☆ ☆ ☆

पृष्ठ 1 का शेष

तुम्हें अंधकार में ही छोड़ दिया।

अब इस अवस्था में तुम में और अन्य कामों में क्या अंतर रहा। क्या एक अंधा अंधों में बैठकर कह सकता है कि तुम्हारी हालत से मेरी हालत अच्छी है।

हे अज्ञानी क़ौम! मैं तुम्हें किस से समानता दूं, तुम उन दुर्भाग्यशालियों के समान हो जिनके घर के निकट एक दानशील व्यक्ति ने एक बाग लगाया और उसमें हर एक प्रकार के फलदार वृक्ष लगाए और उसके अंदर एक मीठे पानी की नहर छोड़ दी जिसका पानी अत्यंत मीठा था और उस बाग में बड़े-बड़े छायादार वृक्ष लगाए जो हज़ारों मनुष्यों को धूप से बचा सकते थे। तब उस क़ौम की उस दानशील व्यक्ति ने दावत की, जो धूप में जल रही थी और कोई छाया न थी और न कोई फल था और न पानी था, ताकि वह छाया में बैठे और फल खाए और पानी पिए। लेकिन उस दुर्भाग्यशाली क़ौम ने उस दावत को रद्द किया और उस धूप में, अत्यंत गर्मी और प्यास और भूख से मर गए। इसलिए ख़ुदा फरमाता है कि उनकी जगह में दूसरी क़ौम को लाऊंगा जो उन वृक्षों की ठंडी छाया में बैठेगी और उन फलों को खाएगी और उस मीठे पानी को पिएगी। ख़ुदा ने उदाहरण के तौर पर क़ुरआन शरीफ में खूब फरमाया कि ज़ुलकरनैन ने एक क़ौम को धूप में जलते हुए पाया कि उसमें और सूर्य में कोई ओट न थी और उस क़ौम ने ज़ुलकरनैन से कोई सहायता न चाही। इसलिए वह उसी मुसीबत में पड़ी रही। लेकिन ज़ुलकरनैन को एक दूसरी क़ौम मिली जिन्होंने ज़ुलकरनैन से दुश्मन से बचने के लिए सहायता मांगी। अत: एक दीवार उनके लिए बनाई गई इसलिए वे दुश्मन की कार्यवाहियों

से बच गए।

अत: मैं सच सच कहता हूं कि क़ुरआन शरीफ की भविष्यवाणियों के अनुसार वह ज़ुलकरनैन मैं हूं जिसने हर एक क़ौम की शताब्दी को पाया और धूप में जलने वाले वे लोग हैं जिन्होंने मुसलमानों में से मुझे स्वीकार नहीं किया और कीचड़ के स्रोत और अंधकार में बैठने वाले इसाई हैं जिन्होंने सूर्य को नज़र उठाकर भी न देखा और वह क़ौम जिनके लिए दीवार बनाई गई, वह मेरी जमाअत है। मैं सच-सच कहता हूं वही हैं जिनका धर्म दुश्मनों की हस्तक्षेप से बचेगा। हर एक बुनियाद जो सुस्त है उसको अनेकेश्वरवाद और निरीश्वरवाद खाता जाएगा परंतु इस जमाअत की लंबी आयु होगी और शैतान उन पर ग़ालिब नहीं आएगा और शैतानी समूह उन पर विजयी नहीं होगा। उनकी हुज्जत तलवार से अधिक तेज और भाले से अधिक अंदर घुसने वाली होगी और वे क़यामत तक हर एक धर्म पर विजयी होते रहेंगे।

(ज़मीमा बराहीने अहमदिया हिस्सा 5, रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 21 पृष्ठ 312)

☆ ☆ ☆

पृष्ठ 2 का शेष

हज़रत हुजैफा बिन यमान रज़ि अल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया 1240 साल के बाद अल्लाह तआला महदी को अवतरित करेगा।

आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का आदेश कि मसीह मौऊद का ज़माना पाओ तो उसे मेरा सलाम पहुंचाना

اَلَا اِنَّ عِیْسَی بْنَ مَرْیَمَ لَیْسَ بَیْنِیْ وَبَیْنَہٗ نَبِیٌّ وَلَا رَسُوْلٌ ، اَلَا اِنَّہٗ خَلِیْفَتِیْ فِیْ اُمَّتِیْ مِنْ بَعْدِیْ ، اَلَا اِنَّہٗ یَقْتُلُ الدَّجَّالَ وَیَکْسِرُ الصَّلِیْبَ وَیَضَعُ الْجِزْیَۃَ ، وَتَضَعُ الْحَرْبُ اَوْزَارَھَا اَلَا مَنْ اَدْرَکَہٗ فَلْیَقْرَأْ عَلَیْہِ السَّلَامَ ۔ (طبرانی الاوسط والصغیر)

ख़बरदार हो कि ईसा इब्ने मरियम और मेरे मध्य कोई नबी या रसूल नहीं होगा। अच्छी तरह सुन लो, कि वह मेरे बाद उम्मत में मेरा ख़लीफा होगा। वह अवश्य दज्जाल का वध करेगा, सलीब अर्थात सलीबी आस्था को टुकड़े-टुकड़े कर देगा और जिज़िया को समाप्त करेगा (अर्थात उसका रिवाज समाप्त हो जाएगा क्योंकि) उस समय धार्मिक युद्धों का समापन हो जाएगा। याद रखो जिसे भी उनसे मिलने का सौभाग्य प्राप्त हो वह उन्हें मेरा सलाम अवश्य पहुंचाए।

इमाम महदी की बैत का आदेश

فَاِذَا رَاَیْتُمُوْہُ فَبَایِعُوْہُ وَلَوْ حَبْوًا عَلَی الثَّلْجِ فَاِنَّہٗ خَلِیْفَۃُ اللّٰہِ الْمَھْدِیُّ

हे मुसलमानो! जब तुम्हें उसका ज्ञान हो जाए तो तुरंत उसकी बैत करो चाहे तुम्हें बर्फ के ऊपर से घुटनों के बल जाना पड़े, क्योंकि वह ख़ुदा का ख़लीफा महदी होगा।

☆ ☆ ☆

पृष्ठ 3 का शेष

सुंदरता और प्रकाश और बरकतों का ख़ुदा तआला नए रुप से जलवा दिखा रहा है। जिसकी आंखें देखने की हैं वह देखें और जिसमें सच्चा जोश है वह मांग करे और जिसमें एक कण मात्र अल्लाह और उसके रसूल की मोहब्बत है वह उठे और परीक्षा करे और ख़ुदा तआला की इस प्रिय जमाअत में सम्मिलित हो जाए, जिसकी बुनियाद ईंट उसने अपने हाथ से रखी है।

(बरकातुद्दुआ रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 6, पृष्ठ 24)

मुझे ख़ुदा तआला ने क़ुरआन का ज्ञान प्रदान किया है और अपनी किताब की सच्चाईयां और अध्यात्म ज्ञान मुझ पर खोले हैं

मैं हर एक मुसलमान की सेवा में उपदेश पूर्वक कहता हूं कि इस्लाम के लिए जागो। इस्लाम अत्यंत संकट में पड़ा हुआ है उसकी सहायता करो अब यह गरीब है और मैं इसीलिए आया हूं और मुझे ख़ुदा तआला ने क़ुरआन का ज्ञान प्रदान किया है। और अपनी पुस्तक की सच्चाईयां और अध्यात्म ज्ञान मुझ पर खोले हैं और विलक्षण निशान मुझे प्रदान किए हैं। अत: मेरी ओर आओ ताकि इस नेमत से तुम भी हिस्सा पा सको। मुझे कसम है उस हस्ती की जिसके हाथ में मेरी जान है कि मैं ख़ुदा तआला की ओर से भेजा गया हूं क्या आवश्यक न था कि ऐसी महान संकट की शताब्दी के आरंभ पर जिसके संकट स्पष्ट हैं, एक मुजद्दीद (धर्म सुधारक) खुले खुले स्पष्ट दावे के साथ आता। अत: निकट समय में मेरे कामों के साथ तुम मुझे पहचान लोगे। हर एक जो ख़ुदा तआला की ओर से आया उस समय के उलेमा की नासमझी उसके मार्ग में रूकावट बनी। आखिर जब वह पहचाना गया अपने कामों से (ही) पहचाना गया, कि कड़वा वृक्ष मीठा फल नहीं ला सकता और ख़ुदा दूसरों को वह बरकतें नहीं देता जो विशेषों को दी जाती है। लोगों इस्लाम अत्यंत कमज़ोर हो गया है और धर्म के शत्रुओं द्वारा चारों ओर से घिरा हुआ है और 3000 से अधिक ऐतराजों (आरोपों) की संख्या हो गई है। ऐसे समय में सहानुभूति से अपना ईमान दिखाओ और ख़ुदा के बंदों में जगह पाओ। सलामती हो उस पर जो हिदायत के मार्ग का अनुसरण करे।

☆ ☆ ☆

पृष्ठ 9 का शेष

ईसाई अत्यंत निराश और कुधारणाग्रस्त होकर इस झूठी आस्था को त्याग देंगे और संसार में एक ही धर्म होगा और एक ही पेशवा। मैं तो एक बीज बोने आया था सो वह बीज मेरे हाथ से बोया गया और अब वह बढ़ेगा और फूलेगा और कोई नहीं जो उसे रोक सके।

(तज़्किरतुश्शहादतैन रूहानी ख़ज़ायन, जिल्द 20 पृष्ठ 66-67)

अल्लाह तआला के मसीह का लगाया हुआ यह बीज अल्लाह तआला के फज़ल से फल-फूल और बढ़ रहा है। हमने अगर इस की हरी-भरी टहनियां बनना है तो हमारा काम है कि जैसा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की पुस्तकों और कर्म से सिद्ध है, हम अल्लाह तआला से मुहब्बत और आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से इश्क और अपने कर्म और मानवजाति से सहानुभूति और मुहब्बत को ऐसा बनाएं कि हमारे हर कर्म से यह नज़र आए। अल्लाह तआला हमें इसका सामर्थ्य प्रदान करे।

☆ ☆ ☆

पृष्ठ 20 का शेष

रही है। अत: आप ने दुनिया को होशियार करते हुए फरमाया है कि-

"दुनिया में एक क़यामत बरपा होगी वह प्रथम क़यामत होगी और समस्त बादशाह आपस में एक दूसरे पर चढ़ाई करेंगे और ऐसा ख़ून बहेगा कि ज़मीन ख़ून से भर जाएगी और प्रत्येक बादशाह की जनता भी आपस में भयानक लड़ाई करेगी, एक वैश्विक तबाही आएगी और इन तमाम घटनाओं का केंद्र सीरिया देश होगा।"

(तज़किरा पृष्ठ 798)

इसी प्रकार आप तीसरे विश्व युद्ध की भयानक तबाही की ख़बर देते हुए फरमाते हैं- "हे यूरोप तू भी अमन में नहीं और हे एशिया तू भी सुरक्षित नहीं और हे द्वीपों के रहने वालो! कोई बनावटी ख़ुदा तुम्हारी सहायता नहीं करेगा, मैं शहरों को गिरते देखता हूं और आबादियों को वीरान पाता हूं। वह ख़ुदा एक लंबे समय तक खामोश रहा, उसकी आंखों के सामने बुरे से बुरे काम किए गए वह चुप रहा, मगर अब वह भयानक रौब के साथ अपना चेहरा दिखलायेगा जिसके कान सुनने के हो सुने।

(रूहानी ख़ज़ायन जिल 22 पृष्ठ 229)

आदरणीय पाठकगण! आज जो दुनिया के हालात हैं और अरब स्प्रिंग के परिणाम स्वरुप जो राजनीतिक परिवर्तन उभरकर दुनिया के सामने आ रहे हैं और जिस प्रकार पश्चिमी शक्तियों ने अपने व्यक्तिगत हितों की खातिर इन देशों में हालात को बुरे से बुरा बना दिया है जिसके परिणाम स्वरुप दुनिया फिर से एक तीसरे विश्व युद्ध के द्वार पर खड़ी है। आज फिर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का इल्हाम कि "एक पूर्वी शक्ति और कोरिया की नाज़ुक हालत" दोबारा इन हालात में चरितार्थ हो रहा है। विशेष रुप से कोरिया और अमेरिका के वर्तमान झगड़े के बारे में तो हज़रत खलीफ़तुल मसीह खामिस अय्यदहुल्लाह तआला ने स्पष्ट शब्दों में फरमा दिया है कि केवल मिडिल ईस्ट या अरब देशों का ही मामला नहीं है कि जहां से युद्ध के शोले भड़क सकते हैं, अमेरिका और कोरिया का भी तनाव हर आने वाले दिन में बढ़ रहा है और दुनिया के हालात पर नज़र रखने वाले और विचार करने वाले इस बात का स्पष्ट रूप से इज़हार कर रहे हैं कि अमेरिका का मामूली सा भी हथियारों का प्रयोग या शक्ति के प्रदर्शन का रवैया या कोरिया की तरफ से हथियारों का प्रयोग, चाहे वह बिना नुकसान पहुंचाए डराने के लिए ही हो, इस हिस्से में भयानक जंग पर आधारित होगा।

(ख़ुत्बा जुमा 30 जून 2017 ई)

अत: आज निसंदेह दुनिया एक भयानक तबाही के द्वार पर खड़ी है और कभी भी कुछ भी हो सकता है। लेकिन यह भी अल्लाह तआला का वादा और भविष्यवाणी है कि तृतीय विश्व युद्ध का अंत इस्लाम की वैश्विक विजय के आरंभ से होगा। इस विषय में हज़रत ख़लीफतुल मसीह सालिस रहमहुल्लाह फरमाते हैं-

इस्लाम का सूरज अपनी पूरी आबो-ताब के साथ उदय होगा और दुनिया को प्रकाशित करेगा लेकिन इससे पहले कि यह हो ज़रूरी है कि दुनिया एक वैश्विक तबाही में से गुज़रे, एक ऐसी खूनी तबाही जो मानव जाति को झिंझोड़ कर रख देगी। लेकिन यह नहीं भूलना चाहिए कि यह एक इंज़ारी (सचेत करने वाली) भविष्यवाणी है और इंज़ारी भविष्यवाणियां तौबा करने से विलंबित की जा सकती हैं, बल्कि टल भी सकती हैं। अगर इंसान अपने रब्ब की ओर लौट आए और क्षमा मांगे और अपने हालात को ठीक कर ले तो वह अब भी ख़ुदा के क्रोध से बच सकता है। (ख़ुत्बाते नासिर जिल्द 1 पृष्ठ 930)

अब अंत में मैं हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह खामिस अय्यदहुल्लाहु तआला का एक इक्तेबास प्रस्तुत करके अपने भाषण को समाप्त करूँगा। आप फरमाते हैं-

"हम सौभाग्यशाली हैं कि हमने आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के उपदेश के अनुसार आने वाले मसीह व महदी को मान लिया है जिससे अब दुनिया का अमन और सलामती जुड़ी हुई है और यह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के बताए हुए तरीके के अनुसार पालन करने से होगा। दुनिया अगर युद्धों की तबाही और बर्बादी से बच सकती है तो केवल एक ही उपाय से बच सकती है और वह है हर अहमदी की एक दर्द के साथ इन तबाहियों से इंसानियत को बचाने के लिए दुआ।

हुज़ूर फरमाते हैं कि आज हर अहमदी का कर्तव्य है कि एक दर्द के साथ इंसानियत को तबाही से बचाने के लिए भी दुआ करे। जंगों के टलने के लिए भी दुआ करे, हम इस बात पर ख़ुश नहीं हैं कि दुनिया का एक हिस्सा तबाह हो और फिर बाकी दुनिया को अक्ल आए और वह ख़ुदा तआला की ओर झुके और आने वाले को माने बल्कि हम तो इस बात पर खुश हैं और कोशिश करते हैं और दुआ करते हैं कि अल्लाह तआला किसी को भी उसके बुरे कर्मों के कारण तबाही में ना डाले और दुनिया को अक्ल दे कि वह बुरे अंजाम से बचे। अल्लाह तआला करे कि हमारी दुआओं से उनको अक्ल भी आ जाए और अल्लाह तआला उनको तबाही के गड्ढे में गिरने से भी बचा ले।

(ख़ुत्बा जुमा 30 जून 2017)

साफ दिल को कसरत एजाज़ की हाजत नहीं,
इक निशां काफी है गर दिल में हो ख़ौफ़े किरदार।

☆ ☆ ☆

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की फोटो देख कर
मुकर्रम मौलाना ज़फर मुहम्मद ज़फर साहिब मरहूम, रब्वा

अक्स-ए-जमील व सूरत-ए-ज़ेबा व बावक़ार,
पड़ती हैं क्यों निगाहें मेरी तुझ पे बार-बार॥
दुनिया में हमने देखे बहुत ख़ूबरू मगर,
सूरत तेरी है सनअते सानेअ का शाहकार॥
तेरी जबीं पे हुस्न-ए-अजल की तजल्लियाँ,
तलअत से तेरी नीर-ए-सदाक़त है आशकार॥
दुनिया से बेनियाज़ निगाहें झुकी झुकी,
गज़े बसर की के हुस्न की तफ़सीर शानदार॥
आक़ा तेरी दुआओं से वह दिन करीब हैं,
तेरी झुकी निगाहों को है जिंका इंतेज़ार॥
इस्लाम ग़ालिब आएगा दुनिया में अनकरीब,
दज्जाल को है आज तलाश रहे फरार॥
अबसाअत-ए-हलाकत-ए-बातिलक़रीबहै,
याजूज बेक़रार है माजूज बेक़रार॥
मग़रिब के बुतकदों मे क़यामत हुई बपा,
तसलीस होती जाती है तौहीद का शिकार॥

☆ ☆ ☆